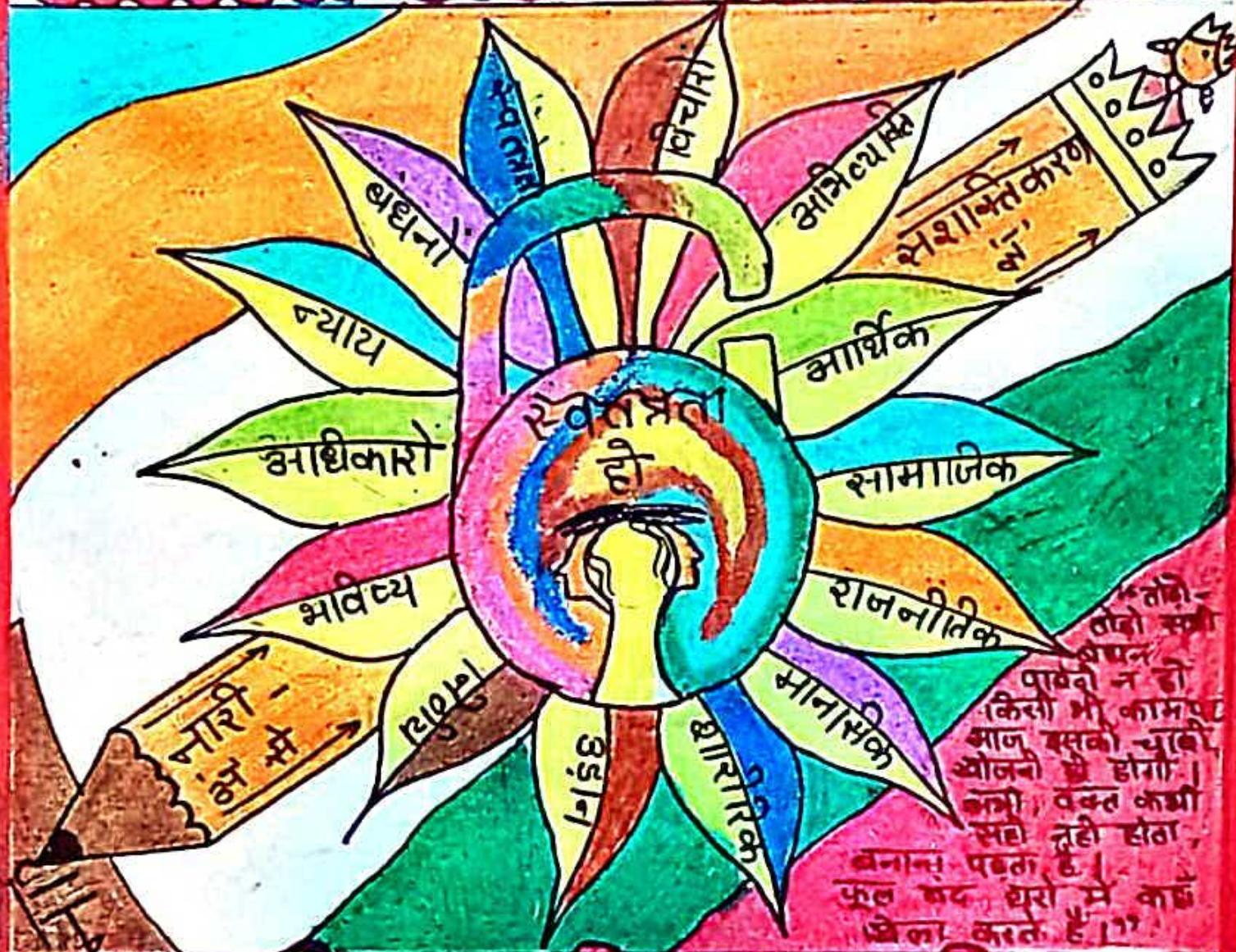


मानसी

हस्तालिखित-पत्रिका

दौलत राम महाविद्यालय



हिन्दू साहित्य पारिषद्

2020-21

साहित्य

मानसी परिवार 2020-21

संरक्षण -

प्रो० सुविता रौय (प्राचार्या)

परामर्श-

डॉ० ज्योति शर्मा, डॉ० संतोष सेन

डॉ० कुसुमलता

शिवांगी, अंजलि

हस्तलिपि-

प्रक्ता, निधि जिंदल, दिव्या, गौरी

मुख्य पृष्ठ आवरण -

आम्बिका

अन्तिम पृष्ठ आवरण - आम्बिका

आंतरिक रेखांकन - श्रीति, सावित्री

मानसी साहित्यिक वार्षिक हस्तलिखित पत्रिका

बोलतराम महाविद्यालय

दिल्ली विश्वविद्यालय

अनुक्रमांकिका

क्रम संख्या	विषय	संचालकार	पृष्ठ संख्या
	कविता -		
1.	परीक्षा है तो पढ़ाई भी जबकि है	उवीता चौरसिया	8
2.	गौरवगान	अमितला	9 - 10
3.	नारी जीवन	नीलम	11 - 12
4.	नारी हूँ मैं	निदा	13
5.	भीड़	खुशी	14 - 15
6.	सूरी की आजादी	फौसल पाल	16 - 17
7.	चुप्पी	शालिनी	18
8.	कुद कहना चाहती हूँ	दीपाली	19 - 20
9.	घुण्डा	मानसी	21
10.	मुझे कविता नहीं आती	आरती	22
11.	आत्मसल	आराधना	23
12.	एकांत	दीपाली	24
13.	जिंदगी की कुद ऐसा जी लिया जाए	खुशबू	25
14.	फौरीना का कहर	गहिमा	26
15.	समाज	रिया वैसला	27
16.	नारी सम्मान	अदिति रामी	28 - 29
17.	नारी	साधना देवी	30
18.	खस्ती	सपना	31
19.	वी दी हाथ	स्वपना	32 - 33
20.	आज की नारी हार नहीं मानेगी	निशि	34 - 35
	• • • • • • • •		
	लैख -		
21.	घारी देवी	उमाकांक्षा नैगी	36 - 39
22.	जातिगत राजनीति	भादना देवी	40 - 41

अनुक्रमणिका

क्र.ग संख्या	विषय	प्रचानाकार	पृष्ठ संख्या
23.	नारी शिक्षा	साधाना देवी	42 - 43
24.	आद्युत्तिक समाज और उसका भ्रम	कल्पनि जीशी	44 - 45
✿	निबंध -		
25.	फौरोना वायरस	दीपाली	46 - 56
26.	फौरोना संकट	साधाना देवी	57 - 69
27.	फौरोना संकटः एक वैशिक महामारी	इश्वरिया	70 - 74
✿	कहानी -		
28.	पुल्हन की सौत	आदिति राणी	75 - 78
29.	घर्म की बचाओ	देवामी	79 - 87
30.	धूगित बाछद - ऐ दे ना	अनू अग्रहरे	88 - 95
31.	बरसात की ती रात	आदिति राणी	96 - 102
✿	पार्श्विक रिपोर्ट - 2020 - 21	हिंदी साहित्य परिषद	103 - 107

स्मृति शीष

सुमृति - शोष

कोरोना महामारी के दौरान कई साहित्यकारों
को हमने खोंदिया, उनके प्रति विनम्र संदेशांलि
अर्पित करते हैं।

जूषा गांगुली -

जन्म - सन् 1945 [कलकत्ता]
मृत्यु - मृत्यु - १३ अप्रैल २०२०
साहित्यिक कृतियाँ - सहायोज [1984], लोककथा [1987]
होली [1989], कोटि मारणि [1991] रुदाली [1992]
स्मृत मार्डि [1998] इत्यादि।
पुरस्कार - संगीत नाटक
अकादमी पुरस्कार।



राहत इन्दौरी -

जन्म - १ जनवरी 1950
मृत्यु - ११ अगस्त २०२०
साहित्यिक कृतियाँ - धूप बहुत
हैं मौजूद, राहत साहब, दो
कदम और राही, रुत रातन
नाराज, इत्यादि।



मंगलोरा डबराल-

जन्म - 16 मई 1948

मृत्यु - 9 दिसम्बर 2020

साहित्यिक कृतियां - पहाड़ पर लालटेन, घर का रास्ता हम जो देखते हैं, हम जो देखते हैं, आवाज भी एक जगह है, लेखक की रोटी कवि को अकेलापन, इत्यादि।



पुरस्कार - दिल्ली हिन्दी अकादमी का साहित्यकार सम्मान, कुमार पिकल स्मृति पुरस्कार, साहित्य अकादमी पुरस्कार।

वेद मेहता -

जन्म - 21 मार्च 1934

मृत्यु - 9 जनवरी 2021

साहित्यिक कृतियां - फेस इ फेस, द न्यूयर्कर, वांकिंग द इंडियन स्ट्रीट्स, पोट्रेट ऑफ इंडिया, द न्यू इंडिया।

पुरस्कार - गागने हम फेलोशीप जीनियस ग्रांट।



डॉ. नरेन्द्र कोहली-

जन्म - 6 जनवरी 1940

मृत्यु - 17 अप्रैल 2021

साहित्यिक कृतियां - महासभर

अश्युद्धय , तोड़ो कारा तोड़ो
वसुदेव, साथ सहा गया दुख
अभिनाम, प्रेमचंद, हिन्दी उपान्यासः
सृजन और समीक्षान्त इत्यादि ।

पुरस्कार- साहित्य सम्मान हिन्दी
अकादमी दिल्ली, डलाका सम्मान
साहित्य भूषण , व्यास सम्मान
पदम श्री इत्यादि ।



डॉ. रमेश उपाध्याय-

जन्म - 1 मार्च 1942

मृत्यु - 25 अप्रैल 2021

साहित्यिक कृतियां- डॉ छोप
हरे फूल की खूबान्न , शोध
इतिहास



कुवैर बेद्यैन

जन्म - १ जुलाई १९४२

मृत्यु - २९ अप्रैल २०२१

साहित्यिक कृतियां - पिन बहुत

सारे, उर्वशी तुझ हो, एक दीप-
धोमुखी, नदी पसीने की, पाँचाली
माँधियों में पेढ़, शाहदः एक लालटेन
शामियाने काँच के, दीवारों पर
दस्तक, तो सुबह हो इत्यादि।





सुम्पादकीरण

संपादक की कलम से..

“मैं अनन्त पथ पर लिखती जी,
सम्मित सापनों की बातें;
उनको कभी न ही पढ़ेंगी
अपने आँख से रातें।”

महादेवी वर्मा की इन पांकियों में अपनी आवाजाओं को अपनी लीखनी के माध्यम से उग्र कर देने का जी भाव दृष्टिगत होता है, ठीक ऐसा ही भाव घोष हमें ‘मानसी’ में संकलित अंग्रेजी रचनाओं में भी नजर आता है। 21 वर्ष पहले प्रारम्भ हुई इस परंपरा को शूला में एक और कड़ी जीड़ते हुए हम दौलतराम महाविद्यालय के हिन्दी विभाग की वार्षिक हस्तलिखित पत्रिका - “मानसी” का 22वाँ अंक सकृत करते हुए अत्यन्त गर्व एवं सज्जनता की अनुग्रहि कर रहे हैं। पिछले संस्करणों की भाँति ही ‘मानसी’ का यह नवीनता संस्करण भी अपने भीतर नये विचारों, आवी एवं लीखन के नये आयागों की समीट हुए हैं। ‘मानसी’ एक ऐसा विस्तृत छशतल है जिसमें हमारे विभाग की दासाओं के मानस में उपने विचारों, प्रश्नों और आवाजाओं की प्रस्तुति दिया जाता है। यहाँ अवसर दिया जाता है भविष्य के नये रचनाकारों को सृजनशीलता, कल्पना और व्यवालक्षण

के पंच लगाकर पहली उड़ान शर्ती का।

मानसी के इस संस्करण में जहाँ सामाजिक विश्व के आसमान में द्यायी स्वतंसे विकास समस्या 'कौरीना' वैशिष्ट्य महामारी की लैकर दाताओं ने विताएँ वाकत की हैं, वहीं कौरीना के स्पृशाव पश्चा ऑनलाइन ही चुके विश्व में बाधित दुई पदाई की लैकर भी अपने विचार रखे हैं। स्थी जीवन को विविध समस्याओं और उन्हें और अधिक दुष्कर बना देने वाले समाज पर जहाँ एक और स्पृशनचिन्ह छढ़े किए हैं, वहीं दूसरी और स्थी के लिए एकांत और आजादी की माँग करके स्थी विश्व की परिधि की भी विस्तृत किया है। इतना ही नहीं, क्षामाजिक समस्याओं की और क्षेत्र करते हुए इन दाताओं ने जाति के नाम पर ही रही राजनीति, धार्मिक कर्गिकाओं और तथाकथित आधुनिक समाज द्वारा पौष्टि किए जा रहे आधुनिकता के आग्ने पर भी कटाक्ष किया है।

साहित्य की विविध विद्याओं - निर्वाचनी, कविता इत्यादि में दाताओं ने अपने इन विचारों और कल्पना का अनुदर्श संयोजन करके 'मानसी' की एक अद्युत रूप दिया है जिसके कारण ही परंपरा की 22वीं शृंखला हीने के पश्चात भी मानसी का यह नवीनताम संस्करण अपने आप में विस्तृत और नूतन है।

किसी भी लक्ष्य की स्थापित के मार्ग में चुनौतियों का न आना असंभव है। परिस्थितियों में बदलाव के साथ ही समस्याएँ भी नया रूप द्यारव कर लेती हैं। आज पूरा विश्व कौरीना जैसी वैशिष्ट्य महामारी के निवारण के लिए स्पृशासन है, दैनी में लगातार दूसरे वर्ष 'मानसी' का फैंपरागत दंग से प्रकाशन संभव न हो सका किन्तु नयी समस्याएँ ही नयी राहों

के अन्येषण के लिए प्रेरित करती हैं और इसलिए लगातार दूसरे वर्ष 'मानसी' का डिजिटल स्क्रिप्ट पी.डी.एफ. (PDF) के स्वप्न में किया जा रहा है। 'मानसी' के स्क्रिप्ट की परंपरा की अक्षुण्ण रस्ते के लिए हिन्दी विभाग की द्वारा इस ही स्थली की दैषकार कहना न होगा कि-

"चट्टान घन के आए थे, जी सामने काझी,

गिरने लगी वो रैत की दीवार की तरह।"

और अन्त में हिन्दी साहित्य परिषद की ओर से हम हिन्दी विभाग की सभी प्राध्याधिकारियों व प्राध्यापक के स्वति अपनी हार्दिक कृतकार्यालय करते हैं, जिन्हीने कदम-कदम पर हमारा मार्गदर्शन किया, परिषद के सभी सदस्य तथा प्रधम, द्वितीय व तृतीय वर्ष की सभी द्वाराएँ भी चान्दुवाद की पात्र हैं जिन्हीने 'मानसी' पत्रिका के सफल स्क्रिप्ट में यथासंभव योगदान दिया और इसे शैर्षक व पठनीय घनाया। 'मानसी' का यह अनुठा मंच आगामी वर्षी में उसी इसी स्क्रिप्ट द्वारा द्वारा लैखन की नई अवस्था स्वदान करेगा इसी आशा में-

"चलता रहूँगा पथ पर,

चलने में माहिर बन जाऊँगा,

या तो मंजिल मिलेगी या

अच्छा गुसाफिर बन जाऊँगा।"

संपादक के स्वप्न में 'मानसी' के इस 22वें अंक का विमीचन करते हुए हम अत्यन्त सफुलिलत और उत्साहित हैं। आप पाठक के स्वप्न में इस पत्रिका से जुड़ी तो हमारी यह दुनिया और विस्तृत हो जाएगी।

संपादिका

अन्यू झा
शिवांगी गुप्ता

कविताएँ

परीक्षा है तो पढ़ाई भी जरूरी है।

परीक्षा है तो पढ़ाई है,
परीक्षा है तो सपने हैं।
परीक्षा के बिना पढ़ाई अधूरी है,
परीक्षा है तो पढ़ाई भी जरूरी है॥

परीक्षा इच्छा पर वनी मौजूदत की कठाई,
चढ़ेगी तभी जब पढ़ाई है।
बच्चों से इसका उचिक है लगाव,
लैकिन बच्चे समझते नहीं हैं इसका भाव।

परीक्षा है भाई कोई बला नहीं,
इससे जो लड़ा वह गिरा नहीं।
पर पता नहीं तुमसे क्यों है इतना श्वीफ,
तुम्हें दैख लच्चे भूल जाते अपनी माँज॥

परीक्षा के महत्व को बच्चों को ज्ञाना है,
कर्रा उससे प्पार उन्हें घट ज्ञाना है।
परीक्षा के बिना उन्नति अधूरी है,
परीक्षा है तो पढ़ाई भी जरूरी है॥

- कविता - चौरसिपा
हिंदी विशेष
प्रथम वर्ष

गोरखगान

भारत के स्वातिर रुद्र की मिटा देंगे।
 अपनी मिट्ठी का तिलक कर
 इसकी ही कब्र में सौ जाएंगे।
 स्वतंत्र भारत है इसको न कभी झुकने देंगे।
 शत्रु ही चाहे जितना भी बोलशाली
 उसे मुँह तोड़ जवाब हम देंगे।
 भारत को आस्मनिर्भर बनाने का जो
 संकल्प लिए हम पल पड़े हैं
 उसको निभा कर ही हम रहेंगे।
 झुकने ने देंगे तिरंगा अपना
 हर जन लिए अपने मन में लिए
 यही उमंग क्षण - क्षण जीते हैं।
 ये तीन रंग पहचान हैं हमारी
 जो हैं उनकता में एकता की पहचान
 चाहे ही हिन्दू - मुस्लमान या
 सिख - ईसाई।
 सबका एक ही प्रतीक है।
 भारत की रानीर रुद्र की मिटा देंगे
 देश पर अपनी जाब भी लुटा देंगे
 लोकतंत्र का जहां वास है।

अनैकता मैं स्कृता का झंडा
जहां फहराया जाता है
वास्तव मैं वो आपना हिंदुस्तान
हूँ कहलाता ।

- अनिका
हिंदी विशेष
तृतीय वर्ष

नारी जीवन

मैं नारी हूँ कमजौर नहीं
 क्यों मैं खुद के ही जीवन पर
 हूँ मेरा कोई जौर नहीं
 मैं श्री तो एक इंसान ही हूँ
 स्वार्थ भरी इस दुनिया मैं उासिर क्यों
 मेरा कोई रोल नहीं ॥

क्यों बचपन से ही मेरी इच्छाओं की
 हर बार दबाया जाता है।
 तुम लड़की हो हृद और तछीब मैं रही
 क्यों ये सिर्फ हमें सिखाया जाता है
 नीठी तो पराया धन होती है कहकर
 हर रोज पराए होने का सह्सास कराया जाता है ॥

अठरह की हीत ही फिर मैं
 अपनों पर ही लोङ सी बन जाती हूँ
 फिर कुछ ही दिनों मैं एक अजनबी संग
 बिन मज्जी मैं ब्याह दी जाती हूँ
 फिर उस पराए घर को ही अपनाकर
 एक खुशियों का नया संसार बसाती हूँ।

जब हीते हैं कभी नशे में वो
बिन गलती में पीटी जाती हैं
तो कभी चौसर के रूप में
दुर्योधन द्वारा भी जीती जाती हैं
क्यों सीता से ही हर बार पवित्रता का प्रमाण
मांगा जाता है।
क्यों दीपदी की ही भरी सभा से बाल पकड़
घसीटा जाता है।

- नीलम
हिंदी विशेष
द्वितीय वर्ष

नारी हूँ मैं

जिसे नहीं हीता अधिकार जीवन का,
हीती हूँ जिसकी ज पैदा हीने की कामना
फिर भी हठ करके पैदा हीने वाली
नारी हूँ मैं।

जिसका पढ़ने का अधिकार तो मिला हूँ,
लैकिन वस उतना ही जितने से उसका विवाह
रांभव ही सर्के एक तथाकथित उच्चरे वर से
वस उतना ही पढ़ने वाली नारी हूँ मैं।
जिसे आजादी और हक तो मिले हूँ,
लैकिन हक से ज्यादा हूँ पाबंदियाँ,
आजादी से ज्यादा हूँ सीमाएँ,
ऐसी आजादी और हक्कों से परिषूर्ण नारी हूँ मैं।
जो कुछ भी पहनें या चूस्कुरासं,
तो मिलता हूँ आमंत्रण पुरुषों की मौरे
साथ कुछ भी करने का मौर शरीर के संग
वस वही आमंत्रण देने वाली नारी हूँ मैं।
जिससे ज्यादा सुरक्षित हूँ जानवर भी
इस उदारी समाज में वस उतनी ही सुरक्षित
नारी हूँ मैं।

- निशा
हिंदी विशेष

भीड़

भीड़ मैं चलते - चलते
 अब रुद्र से मिलना ही
 मैं कहीं भूल गया हूँ।

अनजान रास्तों पर
 अब जाने का बीड़
 कहीं भूल गया हूँ।

सिफ़ कुछ ख्वाहिशों के लिए
 अपना बहुत कुछ
 कहीं भूल गया हूँ।

जिंदगी के इन रास्तों मैं
 जरा देर ठहरना
 अब भूल गया हूँ।

किसी की यार सुनना
 किसी से दो कह लेना
 जरा भूल गया हूँ।

अब बैमतलब की बातों पर
बैहन्ताह हसना
काढ़ीं झूल गया हूँ।

सब कुछ समेटने की होड़ में
किसी को कुछ देना
मैं झूल गया हूँ।

बहुत कुछ याद रखने के लिए
आज मैं भी बया कुछ
झूल गया हूँ।

- रवुरी
हिंदी विशेष
नृतीय वष्टि

रुक्षी की आजादी!

आजादी मिले हमें उपाय हो गया काफी,
पर फिर भी आजादी को सही मायने में समझना है जाकी।

कहने की तो हम आजाद हैं,
पंखु कानून में अभी भी दाग है।

स्त्री की सविधान से तो ही दी है स्वतंत्रता और छूट,
पर वास्तविक रूप से सब पर है तंत्रता और छठ।

धर से तो हम काफी हृद तक हो गए हैं आजाद परिदै,
पंखु बाहर जौय खाते इंसान के रूप में राक्षस दरिदै।

तब भी न्याय मिलने में जीत जाते हैं वर्ष,
और रह जाते हैं तो, सिर्फ उनके चर्चे।

कानून भी बन जाते हैं तब उन्हें क्योंकि,
उन्हें तो करने हैं अष्टाचार के घंथे।

शास्त्र, कॉलेज, बस पहाँ तक की धर में भी जारीर्पी के
लिए मंडरा रहे हैं रवतरे,
आज राह चलते-चलते हो जाते हैं उनके जिस्म के
करते - करते।

जस उसी वक्त हो जाती है हमारी स्वतंत्रता तार-
तार,

जब हो जाती है एक लड़की की इच्छत द्वार्जिता।

क्या यही है आज की आजादी ?

ऐसी आजादी जिसकी संविधान में तो बहुत कर्त्ता है,
परंतु वास्तविक रूप से कोई दर्जा ही नहीं।

इसलिए अब तक हमें समझ आ जाना चाहिए सही
आपने मैं आजादी,
क्योंकि आजादी मिले समय हो गया है काफी।

- कीमल पाल
हिंदी विशेष
द्वितीय वर्ष



चुप्पी

ज़ड़ी हसरत थी न तुम्हे
 हमें चुपचाप देखने की
 ठीक, ही जार्हीं हज चुप
 नहीं करेंगी हक की जात,
 नहीं करेंगी ऊँची आवाज,
 नहीं लड़ीं शिक्षा की लड़ाई,
 नहीं देंगीं नरामरी की दुष्टाई,
 पर क्या तुम्हे राहन होगी ?
 एक चुपचाप स्त्री
 क्या खलौंगी तुम्हे चुप्पी छी ?



- शालिनी
 हिंदी विज्ञेय
 तृतीय वर्ष

कुद्द कहना चाहती है

आज मुझे तुमसे कुद्द कहना है,
 जानती हूँ उस दिन सह लिया सब,
 जो बोला तुमने, इल्जाम तुम्हारे
 सह निए मैंने, क्यों कि कदर थी
 शायद उतनी तुम्हारी, न कि पश्वाह उन लोगों
 की जो बैठे थे महाफिलों में
 जिकी हर बात पर चुपचाप सिर ठिलाया,
 क्योंकि अफ्रिक थी शायद उतनी तुम्हारी
 हाँ, तुमसे मुझे आज कुद्द कहना है।

आज दोबारा सोचती हूँ;
 क्यों सह लिया सब? क्यों न बोला मैंने
 कुद्द?
 क्यों चुँ तक भी न की मैंने? क्यों यह
 कहकर जाने दिया कि ठाँ सब नेरी
 गलती थी?
 आज शायद न धुटती मैं उत्ता,
 अगर उस दिन मैं कुद्द बोल देती,
 ये सच है कि;
 कुद्द पूछना चाहती हूँ कुद्द बोला चाहती हूँ

हाँ आज तुमरो कुद कहना चाहती हूँ

- दीपाली
हिन्दी (किशोर)
तृतीय वर्ष



धूँध

युबह - सुबह हल्के धुँध सी उठती यह सफेद चादर,
 आपने ऊंदर लहूत कुछ समीटे,
 बीच - लीच में दृष्टिगोचर होती ये आकृतियां,
 क्षण - भर में लुप्त हो जाती हैं,
 यह सफेद तुषार - सी चादर हानिकारक अवश्य होती है,
 यथा नन्ही - नन्ही पल्लवित होती बँझे के साथ,
 हृदय मुग्धा जाती है,
 यह कोहरे सी ऊंधकार रूपी चादर केवल,
 दिखने में सफेद है,
 किंतु इसकी वास्तविकता तो कुछ और ही बतलाती है,
 परंतु -
 मंद - मंद मुस्काती हुई,
 धीर - से हलचल मचाती हुई,
 सूर्य की ये असंख्य किरणी
 इस आकाश रूपी जीवन में पसर जाती है,
 नयी सूर्ति व उमंग के साथ कदग रखती,
 तुषार की चादर की हटलाने लगती है,
 तथा ऊंधकार के बाद उजाला कर जाती,
 यह प्रकृति,
 मनुष्य जीवन का सार बतलाती है।

- मानसी
तृतीय वर्ष

मुझे कविता नहीं आती

मुझे कविता नहीं आती,
 मुझे कविता नहीं आती,
 कविता को कैसे लिखा जाता हैं
 मुझे नहीं पता हैं!

कोई कहता हैं कविता मन के भावो से उत्पन्न
 होती हैं।

कोई कहता है कविता कालज्य होती है।
 कोई कहता है कविता स्थितिज्य होती है।

आखिर कविता क्या होती है।

मुझे कविता नहीं आती,
 मुझे कविता नहीं आती,

मैंने बहुत सी कविताएँ पढ़ी हैं

आदिकालीन कविता, मार्किनिकालीन कविता, दायावादी
 - कालीन कविता

वही मैंने हर काल की कविता का
 ऐक नया रूप, नया मुखौटा डी नजर भाया मुझे,
 कविता भी मुखौटा लगाए चक्सी हैं
 यह प्रत्येक व्यक्ति का सच बया करती हैं,

मुझे कविता नहीं आती,
 मुझे कविता नहीं आती,

- आरती
 हिंदी विशेष
 तृतीय वर्ष

आत्मबल

झुका दे मन की हर मुश्किल की
छुलंद कर खुद को और नढ़ा आत्मबल को।

हार नहीं मान सकता जबतक है जान

मिटा अपने डर को, जबा एक नई ज्ञान।

जीत ले अपने हर झुकाम को, झुका दे हर डर को
कर दी साबित अपने इस आत्मबल को।

समुद्र की लहरों से भी छूँचे ही तुम फिर कैसा डर

कर खुद को छुलंद जीत सकता है तू हर जंग को।

जीतूँगा मैं यह खुद से बाद करो

जितना करते ही कौशिश उससे ज्पादा करो।

आ गया है नया सवेरा मान खुद को सूरज की
किरण का डेरा

हार नहीं सकता तू जिंदगी में ये बादा है जिंदगी
का तेरा।

यह तू सुनिश्चित कर, कुछ तू सीख जायेगा
अपनी जिंदगी को नया दरिया तू दिखायेगा,
फिर तू खुद से बादा कर तू जीत पायेगा।

- आराधना
हिंदी विशेष
प्रथम वर्ष

एकांत

आज मुझे अकेला छोड़ दी
 अब न करने मुझे किसी से
 अपने जज्बात बंधा,
 बहुत करवाई अपनी लाती की हँसी,
 देना है कुछ वक्त आपने आप को,
 जिसमें मैं कर सकूँ खुद से लाते,
 जिसमें मैं कर राकूँ अपने दिल से लाते,
 ले राकूँ अपनी जिंदगी के फँसले,
 हाँ अब न चाहती किसी का साथ,
 न याइस कोई अपना, न कोई दोस्त
 बस छोड़ दी मुझे आज अकेला।

आज छोड़ दी मुझे एक अंधेरे कर्मरे में,
 जहाँ न हो चुँ तक की आवाज,
 जहाँ मैं महसूस कर सकूँ, उस गंद कर्मरे की खामीशी को,
 जहाँ उतार सकूँ अपनी मन की लाती को पन्नी पर,
 अब कर्मणी मैं अपने दिल की जिसपर रहा हमेशा से
 दूसरी का जोर,
 अब वो दिल लेगा शायद सही फँसले,
 हाँ आज मैं कर्मणी एकांत मैं खुद से कुछ लाते
 इसीलिए आज मुझे अकेला रहने दी।

- दीपाली

जिंदगी को कुछ ऐसा जीतिया जाए

जिंदगी के सुंदर पल

जी लौ इसे जीसे कल ही आखिरी पल,

जी लौ कुछ अपने लिए, तो जी लौ कभी उपनी के लिए
किसी का एक मुरक्कान में मुस्कुरा दी तो,

किसी के रठ जाने पर उसे तुम खुद ही मना लो

किसी की खुशी में खुश ही जाओ,

किसी के दुख में उसकी दिमत बन जाओ,

फूलों की तरह महकना सीख जाओ,

कालियों की तरह खिलखिलाना सीख जाओ

चिरिड़ियों की तरह चहकना सीख जाओ,

बारिशों के मौसम में मौर की तरह छूमना सीख जाओ,

नदियों की तरह रास्तों पर आर्ह बाले झकाबटों के पार
करना सीख जाओ,

पैड़ों की तरह सबको छापा देना सीख जाओ,

गिना स्वार्थ के किसी से प्रेम करना सीख जाओ,

एक दीपक की रोशनी से जगगगा जाते हैं, हजारों दीपक

किसी की दीपक को जगगगाने के लिए वो एक दीपक
बन जाओ।



- खुशबू
हिंदी विशेष
हितीय वर्ष

कौरीना का कहर

कौरीना तू क्यों हैं यहाँ आया?
 अब सब ही गया हैं पराया-पराया।
 तैरा यहाँ आना हमें न भाया,
 मम्मी-पापा की जाने कैसा है उर समाया?
 मम्मी बीले क्या तू छाय है द्वीप आया?
 चारों तरफ सब यहीं सुनाएँ-
 "घर से बाहर बिल्कुल न जाए"
 भृकूल-कॉलेज भी हम दौड़ आए,
 हमें भी टीचर की याद हैं आए
 ओ कौरीना! तुझसे उरते नहीं हैं हम,
 हमसे भी हैं तुझसे लड़ने का दम
 ओ कौरीना! तू कहाँ से आया?
 जहाँ से तू आया है,
 हमने तुझे यहीं भीज के हैं, दम पाया,

महिमा माथुर
 तृतीय वर्ष

समाज

इस बाष्प की खातिर कितने अरमान जलाएं
आँख भी न जाने, कितने मैंने दुषाएँ।

दिल मैं अपने अंदोरा कर,
दूसरों के दीपक जलाएँ।

सपने मेरे थे लैकिन,
जिए मैंने ही नहीं।

कानूनी अधिकार सारे समझाएँ,
लैकिन पारिवारिक अधिकार किसी ने नहीं दिए,
रीशनी है आँखों मैं लैकिन,
जिन्दगी मैं अंदोरा हूँ।

बीलने को लफज बहुत है लैकिन,
बयां करने की दिल तैयार नहीं।

मन-ही-मन घुट रहा है सवाल मेरा,
च्या हीना नरकरी था द्वेषी मेरा?

रिणा वैसला
टितीप वर्ष

नारी सम्मान

“बेटियाँ छचाओ, बेटियों को पढ़ाओ”

कहता तो हर कोई है,

पर जब यात आये नारी सम्मान की,

कर पाता न हर कोई है,

गलती कोई और करे पर गलत लड़की ही है

कहता तो हर कोई है

गलती लड़की के कपड़ों और व्यवहार में है,

ऐसा कहता हर कोई है।

गलती अगर कपड़ों में है तो बीचते ही बाजारों में

क्यों हैं?

लड़की को ही गलत बता अपनी गलती नहीं,

कोई मानता क्यों है?

अपनी लड़की की ढंग से रहना शिक्षाओं,

कहता तो हर कोई है।

पर अपनी लड़के की ढंग और सम्मान करना शिक्षाना,

शूल जाता हर कोई है।

ये भारत हैं पीरों-बहादुरों का, मेरा भारत महान
कहता हर कोई है।

पर अब न लगता कोई बिर बचा है, न इसमें कची
महानता कोई है।

इस देश में न जाने का सम्मान ही जियेगी नारी
और हर कोई,

पहुँच तुआ अब न डैगी, न उत्थाचार सहेगी नारी
और हर कोई।

बेटियाँ बचाओ, बेटियों की पढ़ाओ कहता तौ
हर कोई है,

पर जब बात आए नारी सम्मान की, कर पाता न
हर कोई है।

आदिति शर्मा
तृतीय वर्ष

नारी

वी कैद ही जाती है बैबक्सी की चारदीवारी में;
 कड़वा घूंट सी जाती है, अपने अद्भुत स्वप्नों का।
 अकसर उलझ जाती है, जिम्मेदारियों के चक्र में,
 खुद की समैट लेती है, उस चक्र की पश्चिमी में।
 कहीं खीं देती है वजूद, अपने परिवार में,
 युँ सहन कर जाती है, सारे दुख-दर्द दुनिया के।
 वी चूल्हे पर पकाती है खाना जब रसीई घर में,
 परीस देती है अपना बनैह और प्यार खाने में।
 कभी खुद अपनों के ताने सहती है, कभी दुनिया के,
 बाँधे रखती है फिर भी, चिश्तीं की डीर मजबूती से,
 जब औरत कभी गायूना होती है, परिस्थितियों से,
 अंदर की आग बुझा देती है, आँसू की बारिश से,
 हुए अत्याचार जब-जब उस पर,
 दुर्गाक्षय धारण कर जाती है, वी अबला नारी॥

साधना देवी
 द्वितीय वर्ष

बस्ती

मेरे पास वी बस्ती है,
 जहाँ वारिका मैं बहती मैरी कबती है।
 यह मत सीधी कि यह मैरी पस्ती है,
 यह बस्ती मेरे देल मैं बसती है।
 उसने गरीब से बना दिया मुझे एक छस्ती है,
 वह बस्ती मुझे दैषकर आज भी हँसती है।
 मिजामें आज तक को मैंने पहुत गँदती है,
 वह मेरे जीवन की तबती है,
 मेरे पास मेरो बस्ती है,
 जो मेरे दिल मैं बसाती है।

सपना
 हितीय उष्म

वी दी हाथ

कल उन आँखी में वी नहीं था,
 जी मैंने आज देखा।
 कल उन आँखी में जो चमक थी,
 आज वह चमक नहीं रही।
 उनकी आँखे आज संजल लगती हैं;
 मौना चाहे झुशी का ही या गम का,
 उन आँखी में नमी बनी रहती है,
 कल जी हाथ उठते थे पिटाई व प्यार से सहलाने को,
 आज पहि उठते हैं आशीर्वद और क्षिफ आशीर्वद देने को,
 कल वी हाथ स्थिर थे,
 पर आज उनमें अस्थिर कंपन दिखाई देती है
 अब उनके कंपते हाथों की देखती हूँ ती,
 मैंवा हुदय भी काँपने लगता है,
 शारीर में भय का संचार सा हीने लगता है,
 मानों साँस गले में ही अटक कर रह गई है।
 फुट छाण झुट को संभालती हूँ
 गले में वसे भय को हृदय से गर्कने का प्रयास
 करती हूँ और सफल हो जाती हूँ,
 मगर,

फिर वही गाव उगने हैप से उत्पल होता है।

साय कहुं तो उस समय जी चाहता है,

समय को वही ठहरा दुः

और...

उन दोनों हाथों को अपने आलिंगन में मर लूँ

और...

कभी न दीड़ूँ।

फिर देखता हूँ उनका हँसता बैजान चैहरा

ती फिर सुद को समात लैता हूँ।

बस दिल में एक ही तमला उठती है

कि चाहे ये हाथ रीम गलतियों पर पीटते रहें

मगर...

आरीवंद देने के लिए कभी न कहें।

सापना
हितीय यष्टि

आज की नारी हार नहीं मानेगी

यौं आज की नारी है
तुम उसे दवाना चाहोगी पर वी देवेगी नहीं,
तुग उसकी अपने हिसाब से चलाना चाहोगी
पर वी चलेगी नहीं
तुम उसके साथ जो होगा उसकी किसी को न
बताने की कहोगी पर
वी सबको बतायेगी,
वी अपने हक के लिए चुद लड़ेगी
वी आज की नारी है
वी अब तुम पर बोझ नहीं रहेगी
वी अपने आप अपना काम कर सकती है
वी आज की नारी है
वी अब तुम्हारी हर बात में 'हाँ' नहीं कहेगी,
तुम्हारी हर बात चुपचाप नहीं मानेगी
तुम्हारी मन-मर्जी से नहीं चलेगी
तुम जैसे कहोगी वी यैसे अपनी शिन्दगी नहीं गियेगी
वो अपने आप अपनी चीज तथा करेगी
वी अपनी मर्जी से लाइफ जियेगी
वी आज की नारी है,
वी डरेगी नहीं, तुम्हारी हर बात - बेक्षणती का जवाब देगी
वी आज की नारी है,

तुम उसे रोकीगी, उसकी काविलियत पर बाक करीगी
पर वो हर तार तुम्हें हरा के दिखायेगी
वो आज की नाशी है

तुम उस पर रखना अपनी दुरी नजर
अब वो बाहर जाए,

तुम करना कीशा उसका बलात्कार करने की
वो अपनी आत्मरक्षा कर तुम्हें जड़े से जताव दीगी
अब वो डरीगी या छवरायेगी नहीं क्योंकि
वो आज की नाशी है।

तुम रोकना उसे कहकर की हम तुम्हारी परवाह करते हैं
पर वो तुम्हारी इन झूठों बातों में नहीं आयेगी अब
वो आज की नाशी है

अब चलेगी वो तुम्हारे जाय,

तुम उसके जाथ चलने की कीशा करना
उसकी काविलियत से जलकर उस पर तैजाव मत केंहना
क्योंकि अब उसने जघाव दैना सीधा लिया है
वो आज की नाशी है, हर नहीं मानेगी,

—निशा
—स्त्रिय वर्ष

लेख

प्रकाशन

धारी देवी

(उत्तराखण्ड)

वैसे तो उत्तराखण्ड में कई चमत्कारी मंदिर हैं लेकिन जिस मंदिर के लिए मैं आपको बताने जो चाही है। वो गालों से छस राज्य की रक्षा कर रही है। ये मंदिर हैं माँ धारी देवी का जो उत्तराखण्ड की रक्षा में अहं स्थापित है। गहां के स्थानीय लोगों का मानना है, कि उत्तराखण्ड में जितने ज्मी धार्मिक स्थल हैं उनकी रक्षा धारी माता ही करती हैं माता के प्रत्येक से लघने के लिए मंदिर में पूजा पाठ पूरे विधि-विधान से की जाती है इलाके ऐसा कष्मी नहीं हुआ की माता ने गहां के लोगों को दाँड़ित किया हो लेकिन फिर ज्मी तो ग भांग के हर निम्न का पालन करते हैं।

उत्तराखण्ड में भीनगढ़ से करीब १५ किमी दूरी पर प्राचीन सिंहपीठ धारी देवी मंदिर स्थित है। गहां प्राचीन मंदिर लंबा की झील में दुब गया है, लेकिन छसके बाद ज्मी घबरों की आस्था नहीं हड़ी। यहां से माँ काली स्वरूप धारी देवी की

प्रातिमा को उसी स्थान पर अपालिप्त कर अस्थायी
 मांदिर में स्थापित किया गया है। लांध की छील के
 ठीक बीचों-बीच अब इस मांदिर का निर्माण चल
 रहा है। भारत में कई चमत्कारों के नाम में आपने
 सुना होगा ऐसा ही एक चमत्कार गाता वारी देवी
 दिन में तीन बार अपना रूप बदलती है लेकिन इनमें
 गुरुसा एवं किसी से पूरा नहीं है कहते हैं
 केदारनाथ में आगा प्रलय वारी देवी के गुरुसे का
 ही नामिजा था। देवमृणी उत्तराशंड के रक्षक के रूप में
 वारी देवी को जाना जाता है। इस मांदिर में गाता देवाना
 तीन रूप बदलती है। माँ प्रातःकाल कव्या, दोपहर में ग्रुवती
 और शाम को शृङ्खला का रूप व्याख्या करती है। पौराणिक
 व्याख्या के अनुसार एक बार घमगंकर बाढ़ में कालीगाड़
 मांदिर बह गया था लेकिन वारी देवी की प्रातिमा एक
 चट्टान से बटी होने के कारण वारो गांव में बह कर आ
 गई थी। गांववालों को वारी देवी की प्रातिमा एक चट्टान
 से बटी दिली और उनकी झँझरीभ आवाज सुनाई दी
 थी तब उन्होंने प्रातिमा को वहाँ स्थापित कर दिया।

पूजारियों के अनुसार गाता काली काली की प्रातिमा हापर
 थुग से ही स्थापित है। कालीगंठ ऐसे कालीस्यों बढ़ों में गाँ
 काली की प्रातिमा कोण बुद्रा में है, परन्तु वारी देवी
 मांदिर में काली की प्रातिमा शांत बुद्रा में स्थित है।

लोकिन शांत बुद्धा गें दिल्ले ताली वारी माता के गुरुस्तो को दुनिया ने उस वक्त देखा, जब स्कार्य, देवम्भूमि पाली में समा गई। ऋषिकेश-लकड़ीनाथ राष्ट्रीय राजमार्ग पर अनुसार से कुट्ट दुरी पर कलियासोङ्क के रामीप माँ वारी देवी का मंदिर स्थित है। ऋषिकेश से मंदिर करीब 115 कि.मी की दूरी पर है। वारी देवी को माँ शारित के स्प भट्टाकाली के स्प में पूजा जाता है। मानवता अनुसार माँ वारी उत्तराखण्ड के चार वास की रक्षा करती है इस देवी को पठाड़ो और तीर्थयात्राओं की रक्षा देवी माना जाता है।

मंदिर में गूर्हा जागृत और साक्षात् है। गृह सिंहपीठ भट्टालओं की आस्था और ज्ञानित का प्रमुख केंद्र है। वारी शारि के पाड़ीय ग्रामण मंदिर के पूजारी हैं। जनश्रुति है कि यहाँ माँ काली प्रातीनि शूकरी और शान को वृद्धा का स्प वारण करती है।

प्राचीन देवी की गूर्हा के छोर-गिर्द चट्टान पर स्क घोल मंदिर स्थित था। माँ वारी देवी का मंदिर अलकगंडा नदी पर बनी 330 मेगावट भीनगढ़ जल विद्युत परियोजना की ऊँल से इब क्षेत्र में आ गया। चाँच से माँ काली का स्प बाले जाने वाली वारी देवी की प्रतिमा को 16 जून 2013 की शाम को उठाया गया।

उस दोरान कुट्ट लोगों का बहना था जिसकी प्रतिमा उठाने के कुस वर्षों के बाद ही उत्तराखण्ड में आपदा आई थी। नोंजूद समय में नाय एं मंदिर का बुल स्थान से उपलिप्त कर

अस्थारी मांदिर में माँ धारी देवी की शुर्ति स्थापित हो गई है।

आकांक्षा नेहीं
प्रथम वर्ष

जातिगत राजनीति

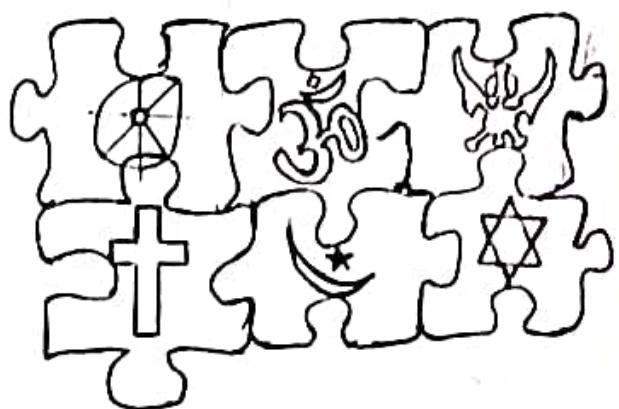
जातिगत राजनीति हमारे देश को विरासत गें मिली है अब हम आजपी के बाद से चर्चा करे तो हम जाएगे कि राजनीति तो यह भाष्यम् और न्यौ सक्रिय हो गया है आज हमारे देश में यह चर्चा चल रही है कि हमारा देश सेकुलरिज्म की ओर जद रहा है। वास्तविकता यह है कि यह कल्पना अपनी जन्मनाजी होगी। हाँ इस बात से डंकाए नहीं किया जा सकता कि हमारी जातिगत हडिया पहले जितनी दृढ़ नहीं रह गयी है इसे रक्त, अच्छी शुल्कात कहा जा सकता है आज रक्त, ब्राह्मण और दलित एक धर्मी में स्मोजन करते दिख सकते हैं इसका कारण अच्छी शिक्षा है जिसने हमारी सोच को नवीन बनाया है।

बात जब जातिगत राजनीति की आती है तो हमारे देश की तसाम लड़ी खार्टिंग किसी क्षेत्र विशेष की सभी जातियों का आवाहा विकालती है, और जो वर्ग लड़गत में होता है प्रायः उसी वर्ग के जाति के अपने किसी जोता को टिकट दिया जाता है उसका उदाहरण 'लिहार राजा'

में देखा जा सकता है जहाँ 2015 अक्टूबर-नवंबर के विषयों का ध्यान द्या तो युनाइटेड नेशन्स की सभी धार्मिक पार्टी जो एकार्गालीयज्ञा की रणनीति है, उस युनाइटेड नेशन्स के 250 से अधिक जातिगत समाजों की। जिसमें उस पार्टी को लड़े - लड़े

रेताओं के बिरक्त की।

यदाँ हमारे सामने आई तेंग उपर कर सामने आता है जिसे स्थिति और परिवेश के हिसाब से राजनीतिक पार्टियाँ अपनी विचारधारा और युजाही रणनीतिया लालती हैं।



साधना देवी

हिन्दू विशेष

हिन्दीय वर्ष

नारी शिक्षा !

समाज में नर एवं नारी दोनों ही समाज के धरोहर हैं दोनों के समाज विकास से ही नारी, समाज तथा देश का कल्याण हो सकता है। इसके लिए सबसे प्रमुख तत्व है - नारी शिक्षा, नारी सशक्तीकरण आदि।

नारी आदि शिक्षित हैं तो उत्तम समाज, परिवार देश के विकास में सहायता हो सकती है। इसके साथ ही नारी का समूर्ण विकास, आत्मानिर्भर, साहसी, परम्परा सहगोग दीयत्व सभी गुणों पर नारी का बाहत्वमूर्ण समाजपालिय गत होगा। गुणों के लिए शिक्षा की अपेक्षा ज्युगिका है।

इसलिए कहा गया है कि विद्या विवाह देती है। विद्युषी नारी ही शिक्षा का गहत समझ सकती है साथ ही साथ जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता का ऐसी वास स्थान होता है प्रायः समाज में आधिक रूप से नारी को सम्मान तो गिल जाता है लेकिन शुभग्रहः देखा जाता है कि किसी पर्व विशेष पर अर्थात् दुर्गापूजा, दिवाली आदि में नारी को देती, लक्ष्मी, गृहशोभा आदि प्रकार से सम्मान गिल जाता है, परन्तु ऐसी माणिक, ही देखा जाता है। आदि सभी शिक्षा पर ध्यान दिया जाए, उसे शिक्षित किया जाए तो, नारी का सबसे बड़ा सम्मान

होगा। बारी द्वारा गन्नालित परिवार का अंथान, छाराकर लगे
का शर्हितारकान होना। गे बारी गिराव रो आएन हो सकता है
इसलिए राष्ट्र ही शुभित बारी ट्रापार, बौतरी, पठन-पाठन उन
राष्ट्री भजों गे राष्ट्री भजों गे पुस्तक के साथ अल्पार उत्तम
सगाज, देश, परिवार आदि का बिगड़ा कर सकती है।

इसे बिधी यां इतर का

बहीं करना चाहिए ऐसा कहने रो
सगाज की शुभित अवस्था नहीं
चलेगी।

अतः बारी - शिक्षा की प्रार्थिता

परिवार, सगाज, राष्ट्र, अन्तर्राष्ट्रीय इतर पर होनी चाहिए तभी
उत्तम जीवन का आजानक उठाया जा सकता है।



शादना देली
हिन्दी विशेष
द्वितीय वर्ष

आधुनिक समाज और उसका मूल

आज दोपहर की अल्पाहार ही मेरे महिलाओं में सब शाब्द आया, शाब्द तो पौटा-सा था विन्दु उस प्रौढ़े से शाब्द के भूले अपनी ओर चुंबक की तरह छींच लिया जिस प्रकार धृती पर मौजूद वस्तु के गुह्यतावर्णन के कारण अदा उदालने पर नीचे आ गिरती है ठीक कुछ उसी प्रकार उस शाब्द ने भूले अपनी ओर छींच लिया अर्थात् भूले विचार विमर्श करने पर विवश कर दिया। शाब्द सुनने के लिये में हैं तो लहूत ही पौटा परन्तु उस शाब्द की गहराई लहूत लड़ी है। अहम जानते हैं कि आखिर के शाब्द हैं वया? तो शाब्द है - पितृसत्ता। साधारणता : पितृसत्ता शाब्द सुनते ही प्रायेव, मनुष्य उसकी परिभाषा सोचता है जो लहूत ही सरल है, पितृसत्ता वह सत्ता होती है जहाँ पुरुष के हाथों में सारी सत्ता होती है। अधिकतर लोगों को यह लगता है कि आधुनिक चुना में तो पितृसत्ता समाप्त हो चुकी है के सोचते हैं कि अब तो गाइलार्स प्रायेव, वार्ड में बड़े बड़े फिल्मों ले रही हैं और सभी कार्य करने के लिए वे दृष्टिंगत हैं गाना कि गाइलार्स की वृद्धि में बहुत से वह सुधार आया है जरूर यह तो केवल हमारे समाज का

एक लोटा-सा दर्पण है। तारतीकिकता, तो गहरे है कि हमारे “आधुनिक समाज” में प्रित्यसत्ता उम्मी ऐसी बोंजूद है परंतु लोग इसे स्वीकारना नहीं चाहते जिसमें भाइलाएँ ऐसी छाँगल हैं तो ऐसी इस प्रित्यसत्ता को अच्छेषा करती है त अपने आपको इसी व्यवस्था के अनुसार ढाल लेती है।

आइए कुछ प्रश्नों पर ध्यान देते हैं:-

- आपके परिवार में बिर्णग कौन लेता है?
- घरों के बाहर बोगप्लेट अधिकतर किसके नाम पर होती है? पुरुष या भाइला?
- क्या प्रत्येक भाइला को पुरुषों की तरह कोई ऐसी वस्त्र पहनने का अधिकार है?
- क्या भाइलाएँ देर शत तक घर से बाहर रह सकती हैं?

संयोग से सभी के उत्तर एक समाचार ही होंगे कि ऐसी हम प्रित्यसत्ता को क्यों अस्वीकार नहीं करते हैं? आजकल भाइलाएँ प्लेट ही स्वतंत्र हो रहे हैं त अपने में से परंपरा होने लग रही हो कि ऐसी वैष्णवी व्यवस्था से बाहर नहीं जिकल पार्ह ही बाहर काम-काज करने के लावजूद ऐसी घर के सारे परिवृत्त कार्य भाइलाओं को ही करने पड़ते हैं। प्रित्यसत्ता के कल एक मानसिकता है जो पुरुष व भाइला विद्या की ऐसी ही सकती है। हमारे समाज को इसी मानसिकता को रखने की आवश्यकता है क्योंकि “उजी खेंदा नहीं होती है लगाई जाती है”

झग्गि जोड़ी
प्रथम वर्ष

निवाद

मुक्ति

* कोरोना संकट *

“कोरोना वायरस् - एक वैश्विक महामारी”

थह तोज जो तूने पहना है, जिससे है तुझे
 तेरा नाम मिला,
 करके बीमार लौता है जान, क्या थही
 है तुझको काम मिला,
 आफत में है डाला दुनिया को, लोग
 नाम से तेरा डर रहे हैं,
 तुझसे संक्रमित होने वाले, अनगिनत
 लोग मर रहे हैं,
 आसान नहीं है इलाज तेरा, तो क्या
 इसान हार जाएगा,
 तुझे जड़ से उँचाड़ कैकेगा,
 मानवता को सवार जाएगा।

वायरस् क्या है?

वायरस् अकोशिकीय अतिष्ठृद्ध जीव है

जो केवल जीवित कोशिका में ही कंश बृह्णि कर सकते हैं। ये नाभिकीय अम्ल और प्रोटीन से मिलकर गठित होते हैं, शरीर के बाहर तो ये मृत-समान होते हैं परलु शरीर के अंदर जीवित हो जाते हैं। ये इतने खुफ्फा होते हैं कि इन्हें सामान्य आँख से नहीं देखा जा सकता है। इन्हें देखने के लिए खुफ्फमदर्शी की आवश्यकता होती है।

इसकी उत्पत्ति कहाँ से हुई?

कीरीना की उत्पत्ति सबसे पहले 1930 में एक मुर्गी में हुई थी और इसने मुर्गी के रक्सन प्रणाली की प्रभावित किया और आगे चलकर 1940 में कई अन्य जानवरों में भी पाया गया जिसे सर्दी की शिकायत थी। इन रक्सन के बाद वर्ष 2019 में इसे दौबारा इसका विकराल रूप चीन में देखा गया जो अब छारि-छारि पूरे विश्व में फैलता जा रहा है।

कोरोना वायरस (COVID-19)

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोरोना का नाम कोविड-19 (COVID-19) लगवा है, जहाँ 'CO' का अर्थ है "कोरोना", (CORONA), 'VI' का अर्थ है "वायरस", 'DI' का अर्थ है डिसीज (Disease) और '19' का अर्थ है इसाल 2019 अर्थात् जिस वर्ष थह बीमारी पेंदा हुई। इस वायरस का सबसे पहले चीन के 'वुहान' प्रांत में देखा गया जो छीरि-छीरि पूरे विश्व में फैल चुका है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने कोरोना वायरस को महामारी घोषित कर दिया है। कोरोना वायरस बहुत सुखम लौकिक प्रभावी वायरस है। कोरोना वायरस मानव के बोल की तुलना में 900 गुना कौटा है, लौकिक कोरोना का संक्रमण दुनिया में तेजी से फैल रहा है।

कोरोना के लक्षण :—

- जुखार
- सन्दी और खाँसी
- गले में समरथा
- शरीर में थकान
- स्नान लौटे में समरथा
- मांसपेशियों में जोकड़न
- लंबे समय तक थकान

विचार के उपाय :—

कोरोना का संक्रमण बड़ी आसानी से कहा जाता है और इसकी अब तक कोई दवा नहीं मिली है, इसलिए इसे बहुत धातक शोग की श्रेणी में रखा गया है। कोरोना के मामले दिन प्रतिदिन पूरी दुनिया में बढ़ते जा रहे हैं, WHO ने इसे महामारी घोषित किया है।

इतिहास इस बात का गवाह कि हर 100 वर्ष पर दुनिया में कोई त कोई महामारी ज़रूर

आती हैं और इससे बेचने का सबसे अच्छा उपाय है, बेचाव।

कुछ ऐसे उपाय इसे कहम जो आप निजी तर पर ले सकते हैं, जिससे आप युद्ध को इससे बचा सकते हैं।

- हौशा अपने हाथ छोएं।
- अपने मुँह की बार-बार न कुएँ।
- सबसे 5 से 6 फीट की दूरी बनाएं।
- बहुत भावशयक न हो तो घर से बाहर न जाएं।
- सार्वजनिक स्थानों पर जैसे की पाल, बाजार आदि जगहों पर न जाएं।
- अपने शोग प्रतिरोधक क्षमता को बेहतर करें।
- लौगीं से हाथ न मिलाएं।
- मास्क भवशय लगाएं।
- कम से कम 20 सेकंड तक साबुन से हाथ छोएं।
- रैलगाड़ी, बस आदि से थाता करने से बचें।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO), पाब्लिक हेल्थ इंजींग और नैशनल हेल्थ सर्विस (NHS) से प्राप्त मूल्यना के आधार पर नम आपको कोरोना वायरस से बचाव के लिए बता रहे हैं। एक्सपोर्ट पर आक्रियों की स्क्रीनिंग हो या फिर ऐंब में लौगी की जांच, सरकार ने कोरोना वायरस से निपटने के लिए कई तरह की तैयारी की है।

इसके अलावा किसी भी तरह की अफवाह से बचें, बुद्धि की सुरक्षा के लिए कुछ निर्देश जारी किए हैं जिससे की कोरोना वायरस से निपटा जा सकता है।

लोगभ्रग 18 वर्ष पहले सार्व वायरस से भी कोई ही खतरा नहीं था 2002-2003 में सार्व की वजह से पूरी दुनिया में हज़ारों की मौत हुई थी। इसका असर आर्थिक गतिविधियों पर भी पड़ा था। कोरोना वायरस के बारे में अभी तक

४६ वर्ष तक के कोई प्रमाण नहीं मिले। कोरोना वायरस जैसे वायरस
 शरीर के बाहर बहुत ज्यादा समय
 तक जिंदा नहीं रह सकते।
 एक अलग ही बीचनी करने की
 मिली है। मेडिकल कटीस में
 मास्क और सेन्ट्राइजर का उपयोग
 तभी करना चाहिए जब आप
 स्थान पर ही जहाँ पानी की
 सुविधा नहीं है या बार-बात छाय
 छोता समंज्ञ नहीं है। इसके भलाका
 बहुत मर्जने मास्क पहनता जाकरी नहीं
 है। इसके लिए घर पर भी मास्क,
 तोलिया या कमाल से भी अपने
 मुँह और नाक को ढक सकते हैं।

कोरोना की भवितव्य स्थिति :-

कोरोना से अब तक पूरे विश्व में 20
 लाख से भी अधिक लोग संक्रमित
 हो चुके हैं और एक लाख से अधिक
 लोगों की जीतें भी जा चुकी हैं।

दुनिया के कुछ प्रमावशालों देश
जैसे अमेरिका, इटली, थ्रूरस्सी, रूसके चैपेट में बुरी तरह आ चुके हैं और वहां रोजाना 1500 से अधिक जाने जा रही है। कोरोना ने पूरे विश्व के अर्थव्यक्ष्या को हिला दिया है और भारत, फ्रांस, जर्मनी, स्पेन, ईरान आदि जैसे देश भी रूसके चैपेट में आ चुके हैं। पूरे विश्व में इस विनाशकारी महामारी ने तबाही मचा रखी है। अफ्रीका की बात तो थह है कि तमाम कोविडों के बावजूद अब तक इसकी कोई दवा नहीं मिल पायी है।

विश्व में कोरोना संक्रमण पर नज़र

विशेषज्ञों का कहना है कि कोरोना वायरस से संक्रमित प्रति एक हज़ार व्यक्तियों में एक नो व्यक्तियों के मात्र होने की आशंका है, अभी तक इस वायरस से बुजुर्गों की मृत्यु कर सबसे ज्यादा है, कोरोना के लक्षण और इसकी रोकथाम के उपायों के बारे में

जानने से पहले आइए कैसे हैं
दुनिया भर में कोरोना संक्रमण की
मौजूदा स्थिति क्या है।

- कोरोना से दुनिया भर में अब तक 1.50
लाख से ज्यादा लोगों की मौत हो
चुकी है।
- फ्रान्स में अब तक कोरोना से 5,031
और दक्षिण कोरिया में 232 लोगों
की मौत हो चुकी है।
- सिफ़ इटली में ही अब तक कोरोना से
22,745 लोगों की मौत हो गयी है।
- चीन में अब तक कोरोना से प्रभावित
लोगों की संख्या करीब 4,632 हो
गयी है।
- दुनिया भर में कोरोना वायरस से
संक्रमित लोगों की संख्या 22.56
लाख हो गयी है।

कोरोना से कुछ प्रमुख देशों
में हुई मौतों का ऑकड़ा

(दिनांक 18.04.2020) तक ।।

<u>देश का नाम</u>	<u>संक्रमित</u>	<u>मौत</u>
- थू०रस्स०र्झ	710272	87175
- स्पैन	190839	20002
- इटली	172434	22745
- फ्रांस	147969	18681
- जर्मनी	141397	4352
- थू०के०	108692	14576
- चीन	82719	4632
- ईरान	80868	5031
- केनाडा	31297	1310
- भारत	14425	488
- पाकिस्तान	7481	143

क्या कोरोना वायरस से मृत्यु निश्चित है ?

नहीं , ज़ेख्सी नहीं की आपको यदि कोरोना है तो अब बच्चों की कोई अस्तित्व नहीं है। सच था है कि जितनी ज़ेख्सी आपको इसका पता लगता है , अपने नजदीकी अस्पताल ज़ेख्सर जाएँ , क्योंकि इसका उपचार घर पर

मुमकिन नहीं हैं और बाकी परिवार
वाले भी संक्रमित हो सकते हैं।

निष्कर्ष :- सतर्क रहें, स्वच्छ रहें,
स्वस्थ रहें और कोशिशा
की समाप्त करने के लिए सरकार
द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का सखली
से पालन करें। इससे पहले भी
ई महामारी आई है जिन पर
हमने पूरी तरह से विजय हासिल
की है और इसी तरह कोशिशा की
भी हम साथ मिलकर हरायेंगे
दूसरों के चेकर में पड़ने से
अच्छा है अपनी रक्षा करें, अह
काफी है।

“घर पर रहें, सुरक्षित रहें ॥”

धन्यवाद!

- दीपाली
(प्रथम वर्ष)
(प्रथम पुरस्कार)

कारोना संकट

(एक वैश्विक बीमारी)

प्रस्तावना —

अहं तज जो तूने पढ़ा है, जिससे हैं तुझे
तेरा नाम मिला, करके बीमार लेता है जान,
क्या भरी हैं तुझको काम मिला,
आकल में है डाला दुनिया को, जोग
नाम से तेरा इश्वर है, तुझसे संक्रान्ति
दोने वाले, अनाडिन लोग मर हैं हैं,
आसान नहीं है बलाज तेरा, तो क्या
इंसान दार जाशेगा तुझे जड़ से उछाड़
कीकोना, मानवता को अंवार जाशगा।

वायरस क्या है?

वायरस अकोशिकीय अतिशूद्ध जीव हैं जो
केवल जीवित जोशिका में ही फैर पूँछि कर
सकते हैं वे नाप्रकीय अम्ल और प्रौद्योगि
क्ये मिलकर गडित होते हैं, शरीर के
बाहर तो से भृत समान होते हैं कि इन्हें
भासान्थ आँख से नहीं देखा जा सकता।
इन्हें देखने के लिए सूक्ष्मदर्शी की आवश्यकता
होती है।

भूमिका -

पश्चि दुनिया में कहर भवनीवाला कोरोना वायरस बहुत भूक्षम लेकिन प्रभावि वायरस है कोरोना वायरस के संक्रमण की दुरुआत भव्य चीन के तुषान शहर में, दिसंबर 2019 में हुई। विश्व स्वास्थ्य संघठन (यूएच) ने कोरोना वायरस को भद्रमारी के नाम से घोषित किया गया है। विश्व में अब वायरस पहले कमी देखने में नहीं आया है। कोरोना वायरस बहुत ही भूक्षम वायरस है लेकिन प्रभावि वायरस है श्री वायरस मानव की तुलना में १०० गुना छोटा है, लेकिन कोरोना संक्रमण दुनियाभर में तेजी से कैल रहा है।

क्या है?

कोरोना वायरस संक्रमण कहता है, जो आमतौर से हमारे वांसी जुकाम के लक्षणों की तरह होते हैं वास्तव में इस संक्रमण के कारण हमें भूखी वांसी, भास जैव में तकलीफ जैसी भमस्था आने लगती है, और आगे चलकर अब हमारी मृत्यु का कारण भी बन सकता है।

कोरोना के अंकुमण को पहली बार चीन के बुद्धान २०१२ में पाया गया था। चीन के वैज्ञानिकों और WHO के अनुसार २८ वायरस कंपनीडॉ के द्वारा मानव शिशीर में २०१८-२०१९ के मध्ये में पहली बार आया था। WHO के अनुभाव अपी, जुकाम, भूखी, खासी, भाँस लेने में तकलीफ और समस्या DODDS के प्रमुख लक्षण हैं। चीन, अमेरिका, कांस, भारत के साथ-साथ आज विश्व के लगभग १०० से ज्यादा देश इस महामारी से पीड़ित हैं। इस वायरस के फ्लाम के लिए किसी औस दवा का इंतजाम हो चुका है। जिससे काली दद तक हमें इस महामारी से दुर्क्षण मिला है।

प्रमुख लक्षण—

कोरोना वायरस बीमारी पता चलने के बाद विश्व स्वास्थ अंगठन (WHO) के अनुभाव भूखी खाँसी, भाँस लेने में तकलीफ और समस्या इसके प्रमुख और प्रारम्भिक लक्षण हैं। प्रारम्भ में यह आम सर्दी जुकाम जैसा प्रतीत होता है पर जांय के बाद ही यह पता लगाया जा सकता है कि यह कोरोना है या नहीं।

द्विंक आने पर व्यक्ति के अंदर से निकले द्विंक के कणों के काश वह हवा में कैल जाती है, और उसके संपर्क में आने वाले व्यक्ति को घट अङ्कमण आसानी से हो सकता है।

घट एक अवधि विवरण के अङ्कमण है तो अभी इस पर धिवाई नहीं देता है, और एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति के संपर्क में आने से घट अङ्कमण पहली बार करवरी 2020 में पाया गया, और आज घट अंतर तेजी से कैल रुद्ध है इसके बारे में हमें बहुत सावधान रखने की आवश्यकता है और जितना ही सके लोगों के संपर्क में आने से बचे और खुद को और अपने परिवार को भुखित रखना है।

कौरीना वायरस अवस्था व्यक्ति में लक्षण-

कौरीना के संपर्क में आने के बाद उस व्यक्ति में भूखी खाँझी, बुखार और भास जैसी अस्था होती है, तो उसे तुरंत हार्मोनल परामर्शी की आवश्यकता है जोन्य के बाद ही घट अपष्ट होता है।

इस वायरस का लिंकार उचावात्र ८८-६०
वर्ष से अधिक उम्र की व्याकुलयों में
अधिक पाचा गया है।

अक्सर वह व्यक्ति जो किसी पुरानी
बीमारी जैसी भूमिका में पीड़ित है उस
पर इस संक्रमण का अक्सर अधिक है।
इस संक्रमण से प्रभावित व्यक्ति का पता
चलने के बाद उसे डिकिल्सा सेवा के
नियंत्रण में एवं अलग बनाए गए विभागित
अस्पतालों में इसका फैलाज किया जाता है।

किसी औद्य व्यक्ति को आम लोगों से
अलग या विशेष रूप से बनाए गए
विभागित अस्पतालों में रखा जाना चाहिए।

कौशिल वायरस की कोई औज दवा या
वैकसीन आ चुकी है तमाम केशों के वैज्ञानिक
और उनकी हीम इस वायरस के वैक्सिन के
या दवा बनाने की कौशिल में प्रथमशील
है।

संक्रमण से कैसे बचें?

विश्व स्वास्थ अंगठी और स्वास्थ मंत्रालय
के अनुसार इस संक्रमण से बचने के लिये
कुछ विशेष दिशा निर्देश आसे किस गए हैं।

एक दूसरे के संपर्क में आने से खरीदी
और दो राज की आमाजिक दुशि को
बनारे रखा गया बाहर निकलते वक्त
जाने से पहले मासक, ऐनेटाइजर का
अवश्य प्रयोग करें।

भूमध्य - भूमध्य पर कम से कम 10 सेकेण्ड
तक अपने हाथी को अच्छे से छोड़ा
खासते याधींकर्ते भूमध्य अपने मुंह और
लकड़ को अच्छी तरह से ढँकें।
झिल्कोहल चुक्त ऐनेटाइजर का बहतेमाल करें।
बहुत जल्दी दौरे पर ही घर से बाहर
निकलें।

इवा और एक दूसरे के संपर्क में आने
से कमके लेलने का खतरा आधिक दौता
है अतः आप अच्छे पहलुओं का
उपयोग करें।

ट्रेन, बस फूथार्ड के भरकर करने से बचें
किसी अंकमित व्यक्ति के संपर्क में
आने के बाद शुद्ध को परिवार या
आमाज से कम से कम 14 दिन तक
अलग रखें।

कोरोना वायरस का आधिक प्रभाव -

इस वायरस से छवाई चाला, शैयर
बाजार, वैश्विक आपूर्ति शृंखलाओं भावित

लगभग भाष्मी श्रेत्र प्रभावित हो रहे हैं।
 यह वायरस अमेरिकी अर्थव्यवस्था को
 आरु तरह प्रभावित कर सकता है,
 जबकी इसके कारण नीति अर्थव्यवस्था
 पहले से ही मुश्किल स्थिति में है तब
 ये अर्थव्यवस्था पहले से मुश्किल स्थिति
 में जिन्हे वैश्विक अधिक इंजन के रूप में
 जाना जाता है अंगूज वैश्विक अर्थव्यवस्था
 में भुस्ती तथा आगे आकर्ष मंदी का
 कारण बन सकता है।

अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव

भारत जब अर्थव्यवस्था को पुनः पठाए
 पर नहीं की कोशिश कर रहा है, ऐसे
 समय में वह वायरस का केवल सतही
 प्रभाव नहीं पड़ेगा तथा ऐसे कठिन
 समय में समस्या का समाधान मात्र
 'स्पष्ट लिफिंग' से संभव नहीं है।

यह समस्या न केवल आपूर्ति शुल्कों
 को प्रभावित करेगा आपितु यह भारत के
 कार्मस्थूलिकल, फ्लैक्ट्रानिक, आरोमेट्रिकल
 जैसे उद्योगों को अचूक रूप से प्रभावित
 करेगी जिसे अर्थव्यवस्था के
 विकास के इंजन माना जाता है।

संकारामक प्रभाव -

भारतीय कम्पनियाँ चीन आधारित वैश्विक आपूर्ति शृङ्खला में शामिल प्रमुख भागीदार नहीं हैं अतः भारतीय कम्पनियाँ इसके अधिक प्रभावित नहीं होंगी।

दूसरा कहाये तेल की कीमतों में गिरावट आ रही है जो कि बृहद् अर्थव्यवस्था और उच्च मुद्रास्फीति के चलाते अच्छी खबर है।

वैश्विक राजनीति पर प्रभाव -

कोरोना संकट के आरू में अमेरिकी और चीनी जैसी दो वैश्विक मध्यशक्तियों के बीच टक्कर से वैश्विक राजनीति पर गंभीर प्रभाव होने की आशंका व्यक्त की जा रही है। इसका पहला प्रभाव अमेरिका और चीन के बीच दृल ही में संघरण व्यापार समझौते पर होगा। भारती, चीन के इस घटनाक्रम में लापक्षाही भर्दे रुक्ष के कारण दुनिया भर में चीन को संदेह की नजर से देखा जाने लगेगा। कोरोना वायरस को नेकर दोनों देशों की बीच झूपना टक्कर नवम्बर 2020 में

हीने बाले अमेरिकी राष्ट्रपति पद के
चुनाव में निपटीयक भूमिका अदा कर
सकते हैं। इस आपदा के रूप-इसके
के धुर तिशोधी ऐसे दृश्य और अमेरिका
को नजदीक ला दिया है जिससे तृतीय
विश्वयुद्ध के रूप में मंडराने वाला
संभावित खतरा लेता नहर आ रहा है।

इस वैश्विक आपदा से निपटने में
बाकाम रहे इल्ली में कुछ समय के भीतर
ही राजनीतिक प्रतिभूतिवाले का संकट उत्तीर्ण
देखने को मिल सकता है लेकिं अनुमान है
कि इल्ली को अपनी वीर्य साथ
दास्तिल करने में कई दौरान लग सकते
हैं वर्चोंके इल्ली रूप स्थिरासिक और
पर्यटन गंतव्य रहा है।

भारत की भूमिका —

~~कोरीना~~ वायरस से भी भारत अद्वितीय
रहा है। भारत को अपना पूरा ध्यान वायरस
के संक्रमण को में लकाना चाहिए।

भारत को आपदा की इस स्थिति में
अपनी वैश्विक राजनीति के किसी भी समूह
में शामिल नहीं होना चाहिए।

कथोंकि इससे भारत को प्रत्यक्ष वा
अप्रत्यक्ष रूप से किसी प्रकार का नाक
प्राप्त नहीं होता है भारत को अपने
पड़ोशी देशों तथा क्षेत्रीय भंगाणों से—
जैसे और बिस्टॉल के साथ मिलकर एक
विशेष कार्यदल का गठन करना चाहिए
ताकि इस आपदा से निपन्ने की
तैयारियाँ मैं भंचार की कमी न रह जाय

अरीघ्य भैतु रूप—

निसंदेह यह संकट का असर था
जिसमें २०८१-१७ मध्यभारत से होने वाली
हानि की कम करने के लिए असाधरण
उपायों की खरूरत है अरोग्य भैतु
रूप को बस्टॉल करने अब्दी सरकार
के दिशा-निर्देश से आम लोगों के मन
में संदेह उत्पन्न हुए हैं जिसमें देश के
नागरिकों की व्यक्तिगत जानकारी भी भाँगी
जारही है विपक्ष व सेंशन मीडिया सरकार
के कस आदेश का विरोध कर रहे हैं
और लोगों का कहना है यह उनकी
निजता के अधिकारी में उस्तझेप है
ऐसी स्थिति में सरकार की लोगों की
अमीर शिक्षाओं का समाधान करने के-

के लिए आरोग्य सेवा रूप पर २००
विस्तृत ईडमैप प्रस्तुत करना। याहौं
ताकि उनकी समी तरह १५% का
भागाधान हो सके।

शिक्षा के क्षेत्र में—

अप्रैल माह के अंत में जब विश्व
के आधिकार्य देशों में लॉकडाउन लगा
किया गया तो विद्यालयों की पूरी तरह से
बंद कर दिया गया था, जिसके कारण
विश्व के लगभग ३० प्रतिशत दालों की
शिक्षा बाधित हुई थी और विश्व के लगभग
१.८ लियन से अधिक २५०० दाल
प्रभावित हुए थे।

कोरोना वायरस के कारण शिक्षा में
आई इस बाधा का सबसे अधिक प्रभाव
गरीब दालों पर देखा जा सकता है और
आधिकार्य दाल ऑनलाइन शिक्षा के
माध्यमों का उपयोग तर्ह कर सकते हैं,
जिसके फार्ड छोटे दालों विशेषत दालों के
पापस स्कूल न जाने की भावना बढ़ गई
है। नवम्बर २०२० तक ३० देशों के ५७२
मिलियन दाल इस सहायता के कारण
प्रभावित हुए हैं, जो कि दुनिया भर में
नामीकित दालों का ३३% है।

“परिवर्तन विकान सम्मत है, परिवर्तन को आश्वीकार नहीं किया जा सकता है, जबकि प्रगति शब्द और विवाद का विषय है”

उपर्युक्त कथन आधिक व भास्मायिक प्रगति के इस अंडा में उत्पन्न हुए विभिन्न विवाद को ही चरितार्थ करता है, जिनमें से वर्तमान समय में कोरोना वीरुत्पन्न भवामारी को उपायकरण के रूप में देखा जा सकता है जिसमें विश्व अर्थव्यवस्था व समाज की अनेक परिवर्तन का भास्मना करना पड़ रहा है।

निष्कर्ष -

भूतके रहे, अब रहे रहे रहा रहा रहे और कोरोना को समाप्त करने के लिए भरकार छारा जारी दिशा-निर्देशों का संचलन से पालन करें। इससे पहले भी कई भवामारी आई है जिन पर उम्मेद पूरी तरह से विजय दास्तिन की है। आज लगभग पूरा विश्व इस भवामारी से ब्रह्मित है। इस जानलेवा बीमारी से घबराने की अवश्यकता नहीं है विश्व रहा रहा मिंगालन और रहा रहा मिलालय के नियमों का पालन करके रहे सकते हैं।

जैसा ही भक्ति अन्य व्यक्ति के
संपर्क में आने से बने और वर्ष
हो।

कोरोना वायरस से बचाव की तैयारी
न के बल भवित्व का उत्तमोत्तम है जिसके
सभी संस्थानों, संसाधनों विज्ञी और
भाविजनिक स्कूलों, अब तक कि सभी
व्यक्तियों को आकर्षित कर और आग्रह
तैयारी होना पाइए।

* साधना देवी
(ष्ठीय वर्ष)
(ष्ठीय पुरस्कार)

कोरोना संकट — एक वैश्विक महामारी

भूमिका :- कोरोना संकट एक वैश्विक स्तर की महामारी है, जो आज विश्व भर में फैली हुई है और पूरा विश्व इससे प्रभावित है। कोरोना की कोविड भी कहा जाता है। (Covid - Corona virus disease) जो अन्त 2019 में जिसका प्रारंभ हुआ था कोरोना महामारी के कारण विश्व भर में बहुत से परिवर्तन हुए हैं, जिनके बारे में कभी कल्पना भी नहीं हो सकती थी परन्तु आज वह सब हकीकत में तबदील हो गया है।

प्रभाव :- कोरोना संकट के कारण पूरे विश्व में अनेक प्रभाव पड़े हैं जो साकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार के हैं:-

स्कारात्मक

— परिवार से जजकीकी —

कौशिना र्यंकट के आने के पश्चात् लोगों का बाहर आना-जाना तथा परिवार से दूर रहना असंभव - या हो गया था क्योंकि कौशिना र्यंकट के कारण सारे काम-छंडे बंद हो गए, विद्यालय, विश्वविद्यालय तथा अन्य सभी कार्य जो बाहर जाकर होते थे वे कुछ समय के लिए बंद हो गए थे, इसलिए सबको अपने परिवार के साथ समय व्यतीत करने का अवसर प्राप्त हुआ, जो आज की जिन्दगी की भाग-दौड़ में नामुमानित था। मनुष्य की कौशिना र्यंकट के कारण ज्यादा से ज्यादा समय परिवार, बच्चों के साथ समय बीताने को मिला।

→ पर्यावरण साफ — कौशिना र्यंकट के आने का दूसरा स्कारात्मक पहलू पर्यावरण साफ होना है। पर्यावरण अनेक प्रकार के कारण से दूषित था। जैसे- ड्राफिक।

कौरोना संकट के आगे से ट्रैफिक जाम में काफी रुक तक गिरावट आई, जिससे पर्यावरण साफ-सुधरा हुआ। जिन बड़े-बड़े पहाड़ों को दूर से देखने पर दिखाई नहीं देते थे जो आसानी से दिखने लगे। नदियों का जल स्वच्छ हो गया। थमुना नदी साफ हुई, गंडगी का रुक कम होते ही उसका जल साफ हुआ।

⇒ वौकल फौर लौकल :- कौरोना संकट के फैलने के बाद देश की भौगोलिक व्यवस्था डेंगमगा गई थी इसलिए बाहर के दूसरे देशों से माल व्यवस्था असंभव होता जा रहा था। इसलिए देश में बौकल फौर लौकल भवियान का शुभारंभ किया, जिससे कि देश में बनी हुई चीजों का इस्तेमाल करके देश की उन्नति की जा सकें।

नकारात्मक :- सामाजिक दृष्टि -

कौरोना संकट इतना जुकसानकारी

तथा थह एक व्यक्ति से दूसरे में
 पैलता है इसलिए प्रमाज में लोगों
 की एक-दूसरे से दूर रहना अनिवार्य
 हो गया। सभी अपने घरों में रहते
 तथा धौठरों पर भी दूसरों के घर न
 जा सकें। बाहु ऐसे व्यक्ति का समान
 इत्यादि भी नुकसानदायक स्पावित हो
 रहा था। जो कभी न हुआ वह इस
 कोरीना संकट के दौरान हो गया कि
 सभी की एक-दूसरे से दूर रहना
 पड़ा तथा इस नियम का पालन
 करना पड़ा —

“दो गज की दूरी
 मास्क है जोखी ॥”

⇒ आर्थिक दिक्कतें :- कोरीना संकट का
 दूसरा और सबसे
 महत्वपूर्ण नेकारात्मक प्रभाव है — आर्थिक
 दिक्कत। जो न सिर्फ घरों में
 तथा सरकार की भी इसका सामना
 करना पड़ा। घरों में लोगों ने
 जो कमाए हुए ऐसे थे वो भी
 लग गए क्योंकि अह काल कभी
 धंधे तथा लोगों की तौकरी

बंद कर दी। इस कारण लोगों को आर्थिक दृष्टि से बहुत कष्ट लेते पड़े। और लोगों को अपना धर राहवों से छोड़कर गाँवों की तरफ प्रवायन करता पड़ा। धरों का किराया जमता आधिक था कि उसे चुकाना लोगों के लिए नामुमकिन ही रहा था। सरकार को भी कीरीताकाल में आधिक छानि हुई जिससे आर्थिक दिक्कतों का व्यापता करता पड़ा। आर्थिक दर में बहुत तेज़ी से गिरावट आई जिसके कारण सरकार के पास भी आर्थिक दिक्कतें थीं।

उपसंहार— कीरीता महामारी कितनी धातक है, जिससे कितने लोगों की जान भी चली गई परन्तु लोगों ने इस महामारी का व्यापता किया तथा आज भी जिन्दा है। इस अपना काम निरंतर कर रहे हैं और आपदा में भी ठमने अवसर को देखा है, ऐकात्मक पर्णमी भी है। और जल्दी ही इस महामारी से भी जिजात पारंगी।

- इशु खिया
(प्रथम वर्ष)
(तृतीय पुरस्कार)

कहानियाँ

दीपा देवी

कुहन की मौत

मुबह-सुबह बाहर से आ रही चीखों से एकदम धब्बा के उड़ने के बाद जब मीने खिड़की से देखा गया मिसेज शर्मा के पार में कीनुहल मचा हुआ था। कुछ अनहींनी के बारे में लौटी हुज में जब नीचे गली में गयी तो देखा कि मिसेज शर्मा चीख-चीख के गये रही थी। और मिस्टर शर्मा एक काने में सुन्न हुए भैंडे थे।

पूढ़ने पर पता चला कि उनकी इकलीती ही सुषमा की मौत ही गयी थी। यह लात सुन के मैं जड़ ही गयी।

सुषमा तो मेरी भी बच्ची जीर्यी थी अझी तीन हफ्ते पहले तो कितनी धूमदाग से उसकी शादी की गयी थी।

मिसेज शर्मा ने मुझे देखा तो रोते रोते बोली, "देखो सुचा हमारी सुषमा की मार दिया उन छविन्द्री ने।"

"मेरी कूल सी बच्ची को जिन्दा जला दिया अरे! एक महंगी जाड़ी ही तो नहीं चुका पाए थी। हमारी बच्ची की जान लेकर उहला ली लिया। न जाने कितना

लड़पी ही थी तो ॥१॥

मेरी उंगलियाँ भी छारनी की तबह आँख
बह रहे थे। अौर बामनी ढीटी व्ही सुषमा
की यादे एक चलाचित्र की झाँति चलनी लगी।
महज ३ बाल की थी, सुषमा जब
“मेरी नयी - नयी हुटी थी॥२॥ हमेशा मुझे ही
देखती रहती थी। कितनी प्यारी लगती थी
जब वी मुझे अपनी मीठी आवाज वी आंटी
कहती थी। एक दिन घर की बेल बजी।
मैंने छवाऊ खीला तो बामनी सुषमा एक
गुलाबी प्रकाक डालकर हाथ में प्यारी-सी
गुड़िया लैकर खड़ी थी। कितनी प्यारी लग
रही थी वी बिल्कुल परी की तबह।

“आंटी, मैं अच्छर आ जाए॥३॥ सुषमा
ने प्यारी व्ही आवाज के साथ कहा।

“हाँ हाँ लैटा क्यों नहीं। नुम कभी भी
आ सकती ही॥४॥ (मैंने उसके कर पर साथ
फैरते हुए कहा)

“आंटी मैंनी गुड़िया की आज आप
अच्छे से तैयार कर दी क्योंकि आज इसकी
वादी॥५॥ (सुषमा ने प्याए भरी निशाही से

मुझे देवर्ते हुए कहा ।

मैंने उसके कहने के मुताबिक उसकी
भुदिया को दुल्हन बना दिया ।

सुषगा चहकते हुए बीली कि जब मैंनी
वार्षी हीठी ना ली आप मुझे तैयार करना ।
२३ साल बाद जब मैंने सुषगा की दुल्हन
की तरह सजाया तो वैका लगा जीसे कोई
परी धरती पैर आ गयी ही ।

मैं नहीं जानती थी कि ये हम
सबकी उसके बाद उपाखियि मुलाकात होगी ।
कुछ देर बाद जब पुलिस लाश की लेकर
आई तो दिल में झक ऊस री उठी और
अपने की चीखकर रोने वीक न लगी ।
क्योंकि हमारी फूल वी लच्छी जिसे हमने
लाल भोड़ा पहनाकर घर से विडा किया
था । वी आज भक्ष्य लाश में जली हुयी
चमड़ी के बाद वापस उगयी थी ।

दिल जीर - जीर से री - रोकर कह
वहा था कि वीने भी कोई उताला नहीं दिया ?

२६ साल तकहीरे माँ बाप ने तुँहोंने भी
न लगानी दी उनीहें उन दीर्घी ने हमारी

बच्ची की कीमत एक कारू जितनी समझा ली।
भब उसको अन्तिम संवकार के लिए
लै जा रहे थे तो यह कहने वाले खुद
को न बोक न सकी कि उर्हे लगती
रहम करी इस बच्ची पर ।

एक बार जला तो दिया अब दोबार
सी यह खुल्म न करी इस पर ।

माँ हमेशा इच कहती थी कि बोटी
मै भूखे लोगों का पेट तो हम भर सकते-
हूँ लोकिन नियत के भूखे नीगों का पेट
हम कर्जी नहीं भर सकते ।

अदिति शर्मा

बी०ए० हिन्दी (विशेष)

तृतीय वर्ष

कहानी धतियांगिता-प्रथम पुस्तकार

धर्म की बचाई

यह कहानी लिहार के लक्ष्मण गिले के गजपुर गांव की है। कहानी का आनंद गजपुर गांव के लक दोटी से विश्वविद्यालय से वृन्दावन में होता है।

अम्लेंडकर विश्वविद्यालय में गांव के सभी द्वास- द्वात्राएँ पढ़ते हैं। अधिकतर द्वात्री की संख्या उच्चवर्ग है। उच्चजाति की संख्या गांव में आधिक है। गांव में दोटी जाति की संख्या बहुत ही कम है। और दोटी जाति के लोग भी ही ती वह गांव से दूर निवास करते हैं।

विश्वविद्यालय भी लक कक्ष में मास्टर साहब वर्ग व्यवस्था की समझा रहे हैं। कक्ष में बड़ी जाति के लड़के व लड़कियां थीं। कुछ ही दोटी जाति के थीं। मास्टर साहब खुद ही बड़ी जाति के थे कि वे वर्ग व्यवस्था इस प्रकार समझा रहे थे। मानो कि वर्ग व्यवस्था से अद्भुत की हमेशा। के लिए मिटा दे और इस विश्वविद्यालय से अद्भुत की बाहर फेंक दे।

कहा के आखिरी बैच पर कक्ष पतला-दुबला
व सातले रंग का लड़का लौटा था। जिसका
नाम राकेश था। राकेश हीरी जाति का
लड़का था। जिसे सब छात्र कभी अद्भुत व
कशी चमार कह कर पुकारते थे। मास्टर
साहब ने उस लड़के की खड़ा करके पूछा:-
राकेश तुम अद्भुत होना ? सभी छात्र हँसने
लगे सिर्फ उसका हँसत जी रहमान था वह
खामोश था। मास्टर जी ने राकेश से पूछा
तुम्हारे बाबू जी क्या काम करते हैं राकेश
चुप-चप सिर झुकाउ हुआ था।

कहा समाप्त होने के बाद राकेश व उसका
मित्र रहमान बाहर आ गए। रहमान राकेश का
बड़ा अच्छा मित्र था। रहमान ने राकेश की
समझाया कि, "होइ न गर्कीश सब हैरे ही
है अब विश्वविद्यालय में आधिक ऊची जाति
के हैं तो वह अपना शोल तो जमाए ही
अब क्या कर भकते हैं ?" राकेश शीढ़ी ढेर
चुप होकर बोला, "इस गांव में हम जीसे

लीजा लंहुत ही कम थे। मैं इसलिए पढ़ रहा हूँ।
लाकि अपनी बाबू जी का सपना पूरा कर सकूँ।
अब वह साल खत्म हो जाए फिर
दिल्ली आकार काम दूँड़कर रही रहूँगा। ॥

यह सारी बातें शानी नाम की व्यक्ति
लड़की सुन रही थी। शानी इस गांव द्यानी
शाजपुर गांव के घमीळार ठाकुर साहब की
बेटी थी। जो राकीश के कहाँ में ही पढ़ती
थी। वह भी ऊँची जाति की थी। लैकिन वह
आरी की तरह छूत-अदूत में विश्वास नहीं रखती
थी। वह मन ही मन राकीश की पंसद र
धुम करने लगी थी। लैकिन राकीश उससे
कभी भी बात नहीं करता था। क्योंकि वह
इसका अंजाम खानला था। शानी रामीशा इस
कीशिश में लगी रहती थी कि राकीश उससे
बात करे। तथा वह अपने दिल की बात
बता सके।

शानी व्यक्ति बड़ी कोठवी में अपनी बाबूजी के
चाचा-चाची के भाष रहती थी। माँ की
मरे हुए पाँच बाल ही गया था। धर
वाली वी उसकी इतनी पटती नहीं थी।

लालूजी बस पूरे दिन हुक्का पीते रहते थे। और जगीदारी के साथ लीडे रहते थे। चाची जी घर का भारा काम करती थी। और चाचा जी भागीन व बैतीलाडी के फ़सले लेती थी।

एक दिन गांव में बहुत बड़ा मौला आया था। शनी अपनी भाष्यियी के साथ मैली में आयी हुयी थी। शक्ति व उसका दोस्त बेहमान भी आया हुआ था। शनी की वह मीका मिल गया कि अब वह शक्ति से बात कर ले उसने शक्ति का साथ पकड़ा वह नहीं किजारे चौकाहे पर ले आ कर पूछने लगी तुम मुझसे बात क्यों नहीं करते, शक्ति ने अपनी सारी बात कह दी जो उसने अपने दिल में रखी थी। दूर्दृशी शनी में भी तुम्हें पसन्द करता हूँ लंकिन यह धर्म यह आत-पात व समाज हमें एक साथ नहीं बहने देगा। मैं अद्युत आति में हूँ मेरे लालूजी चमड़े का काम करते हूँ हमारा वर्ग बहुत पुराने क्षमता के कष्ट छोलता आया हूँ हमें चाहे हर इन्ह-

पर आश्वान मिल जाए लेकिन हम अद्भुत-अद्भुत ही रहेंगे ॥०० राकेश की आंखों की आँखें झलक रहे थे और कह रहा था, “नुम बड़ी जाति व बड़ी धर्म ही तुम अग्रीक धरानी की ही तुम्हें कष्ट नहीं भहने पड़ते हीरे तुम इस गवीब पर द्या करी और गीरा व अपना जीवन सुखी रखो। मुझे ढीड़ दी ॥१

यह सब बातें शुन कर बानी के आरों रही आँख निकल रहे थे तथा कुछ दौर बाद वह बीजने लगी “अच्छा! तुम कहते ही कि मैं बहुत सुखी हूँ। जिस घर में मैं रहती हूँ न वह कोई सुखी नहीं रह सकता जिस घर में ऐसी स्त्री की कोई इच्छत नहीं है वह घर अपनी आप की बहुत बड़ी जाति व धर्म का मानता है मेरी माँ की मेरे बाबू जी ने श्री-श्री अल्याचार करके ठक्की भगवान के पास पहुँचा दिया। चाचा श्री चाची की बहुत मारते हैं हमारे घर में कोई छेटा नहीं है न इसालिए चाचा व बाबू जी हमें बाबू जी का इसका दीखी समझते थे। और बाबू जी ने ठीक मैं आज तक मुझसे बात

नहीं की। लिया थार गी शरीर की मान भावनाओं
नहीं मिलता उसी छोला बालाया जाता है।
वह थार अपने आप की बड़ी खुला जाति त
धर्म का कैसे मान सकता है जी तो नहीं
मान सकती है।”

यह सब बते सुनकर राकेश कुछ देर
तक चुप रहा लेटा रुक क्षण वह आशने
लगा कि वह शारीर की गली लगा ले लैकिन उम्मी
दीसा नहीं किया।

जदी किनारे रुक आकर्मी ने शारीर राकेश
को देख लिया। उस आकर्मी ने ठाकुर साहब
की शारीर बात बता दिया कि छुनिया
का बेटा राकेश व आपकी बेटी रुक साध
थी। यह सब सुनकर शारीर के चाचा ने
शारीर की पकड़ लिया घर ले आए उन्हींने
शारीर की बहुत मारा ठाकुर साहब ने शारीर
की मार्ती हुए कहा, “तू अपनी जाति व धर्म
की मिटाना चाहती है उस अद्भुत के बाद
क्या कर रही थी।” शारीर ने सब कुछ बता
दिया एवं ठाकुर साहब ने उसी बहुत मारा
तभी शारीर ने बीती हुए कहा, “आच्छा ! तुम्हें
अपने धर्म की पड़ी है कुछ महीने पहले

इस गांव में एक औंकित के साथ हैडडाइ हुआ
था तब आपका धर्म कहा था ।” लल उस
ओंकित की बचाकर आपना धर्म नहीं बचाया ।
उस कहते फिरते ही अदृती भी धर्म की
बचाओ । ठाकुर ने शानी को बहुत मारा तथा
कमरे में बन्द कर दिया । वह सीचनी लगा
उस अदृत धुनिया ते उसके जीर्णे से कल
निपटूँगा । अगले दिन शानी अपनी कमरे में
न ही पुरा गांव ढूँढ़ लिया पर मिली नहीं
थी ।

अगले पाँच साल बाद ...

शानी अब दिल्ली में ऑंगनवाड़ी में कुछ
महिलाओं के साथ काम करती है । तथा
कुछ महिलाओं के साथ लक किवाए के भजान
में रहती है । एक दिन उसकी मुलाकात शक्ति
से ही जाती है । वी शक्ति को देखकर बहुत
खुश हुयी । वह पूछनी लगी तुम दिल्ली में
क्या कर रहे हो ? शक्ति लोलता है मैं यह
वेलवै कर्टेशन पर टी.सी. की नीकरी करता
हूँ । और तुम ? मैं ऑंगनवाड़ी में कुछ
महिलाओं के साथ काम करती हूँ । तुम
यहां अकेले रहते हो ? नहीं मैं अपनी
पत्नी और दो बच्चियों के साथ रहता
हूँ । यह बुनकर शानी उत्साही गयी ।
शक्ति यह बतानी लगा कि तुम्हारे गांव

दौड़नी के बाद तुम्हारे लालू जी ने गांव जो बहुत तगाशा किया मेरे गो-बाबूजी व मुझे बहुत परेशान किया। व हमी मारा-पीटा भी था। पुलिस जो मेरी सिलाए रपट भी लिखता ही थी। उन्होंने हजारा जीवन पूरा नष्ट कर दिया था। ही भान बाद गो-बाबूजी चल जाए किर कुद थीसे लेकर दिल्ली आया पढ़ाई की किर यह ही रि.सी. की जीकरी गिन गयी।

“तुम क्यों दिल्ली आयी थी?” रानी ने जवाब दिया और कर भी क्या कहती थी “उस घर में मेरा भीना बहुत ही मुश्किल था। इसलिए दिल्ली की रेलगाड़ी पकड़कर आ गयी। कुद दिन तक रेलवे स्टेशन पर वही फिर रुक महिला की मदद की ओर बचावी में आ गई।” शकेश ने पूछा, “तुम वापस अपने घर आओगी रानी ने जवाब दिया नहीं कभी भी नहीं जिस घर में सिर्फ धर्म व जाति की बढ़ाता है कर दौरे जाति के लोगों की वृत्ता करना लगा औरती की मान बहमान नहीं देना इस घर में मैं कभी न जाऊँ।” रानी ने बहमान के बारे में पूछा रोकेश ने जवाब दिया मेरी दिल्ली आ जाने के बाद वह भी गांव छोड़कर मुबंदी चला गया। वह रुक कर्पड़े की मील में काम करता है।

रानी ने कहा अच्छा ! रानी जे एक शरण के लिए
भीचड़ी लगी कि राकेश जी कह दे कि मैं
क्या लुकड़रि साथ बह भक्ति हूँ लोकिन
उसने नहीं कहा लेक्ष राकेश जी अलविका
जीते हुए कहा राकेश जीरन जी एक बात
हमेशा धार बरबना कि; धर्म की मत लगायी
बालके हँसानी की धार्म जी लगायी ।

यह बात कहते हुए गानी चाली गई
और राकेश उसकी यह बात बीचानी लगा ।

रेशामी

ली०८० हिन्दी (रिशीष)

द्वितीय वर्ष

कहानी प्रतियोगिता - द्वितीय

पुस्तकाल

धूणित शाक्ष-ए-इंडे जा

सुजाता और मीहन दोनों के लिए ही आज बड़ा शुभ दिन है। क्योंकि आज सुजाता करके माँ बननी चाहती है। और मीहन करके पिता आज के दिन सुजाता अपने बच्चे को जन्म देने चाहती है।

सुजाता हॉस्पिटल में रुडमिट है। मीहन और उसका पूरा परिवार घबघाट के बाइ डॉक्टर के बाहर आने की शह देख रहा है। सबके हृदय में उस लकड़ी पर धून छार-छार हिलारी लै रहा है कि लड़का होगा या लड़की और इस धून के बाइ-बाइ लकड़ी बताया विक सा प्रश्न यह भी कि यदि लड़का हुआ तो हम व्याज उसकी क्या नाम देंगे और यदि लड़की हुई तो उसकी क्या ?

समाज का यह बड़ा ही स्थिरि सा दायरा है कि उसके लिए समाज में इंजिनियरों के उत्कृष्ट सिफर दोहोरे ही ही लिंग हीते हैं

क्षी और पुनर्वास और इन दीनों में भी पुनर्वासका
 पलड़ा बाबा जी भारी रहा है। यह किसी
 भी प्रकार के तीसरे लिंग (किञ्चन)। को आपनी
 समाज के सीमित द्वायरे में नहीं जाना चाहता है।
 कुछ अगदि पश्चात् डॉक्टर आपरेशन
 थिएटर भी लाहर आती है। एक मायूस लटका
 हुआ आ चौहरा लैकर। मौहन और मौहन
 का पूरा परिवार डॉक्टर के मायूस चौहरे की
 दूरतकर और अधिक दबरा जाता है। परन्तु
 तभी अनदर से छच्ची के, कैहां-कैहां, कर रोने
 की आवाज बबके कानों में पड़ती है और
 पूरे परिवार के चौहरे पर सक भाष रकुड़ी
 की लहर ढीँड पड़ती है। परन्तु तभी डॉ.
 मौहन की धीरे से अपने कैलिन में आनी
 की लीलती है। बायद यह हमारे समाज
 का एक कड़वा 'भचही है' कि जिस डॉक्टर
 की हम भगवान का दूसरा रूप मानते हैं
 वह धरती का दूसरा भगवान (डॉक्टर) भी
 तीसरे लिंग को सर्वत्यापि भगवान की बचना
 नहीं मानता बायद यही काशा है कि जब
 वह एक माता-पिता की यह बताता है कि
 आपने किञ्चन की जन्म दिन है तो उसके

चौड़े पर मुस्कराहट र धन्यवाचा के भाव नहीं होते हैं जो एक लड़का या लड़की के जन्म के बजाए माता-पिता की उम्मीदें दीते भगवा होती हैं। मीहन छोरी से डॉक्टर के केबिन में घरेलू करता है। ओर इस भगवा उसके मन में अनेक प्रश्न उठ रहे होते हैं कि कहीं भुजाता या खर्ची में किसी की घालत आप्युक तो नहीं। जिसके विषय में बात करने की डॉक्टर ने उसे केबिन में बुलाया है। डॉक्टर छोरी से अपने को भहज करती हुयी मीहन की कुर्सी पर बैठने का इशारा करती है। मीहन कुर्सी पर बैठते बैठते डॉक्टर के पूछता है - "क्या हुआ डॉक्टर साहिला आपने मुझे इस तरह अपने केबिन में क्यों बुलाया। कोई दिक्कत की बात तो नहीं है। डॉक्टर साहिला की बगाड़ा नहीं आता कि वह अपनी इस बात को किस तरह भी शुरू करे मुख पर थीड़ी असहजता का थाव। लिए बह अपनी बात को इस तरह भी शुरू करती है। हाथिए मीहन जी ऐसा कई दम्पत्तियों के भाषा होता है, यह कोई

शर्म की बात नहीं है आज के भगवा में हगरि
भगवा में लड़का और लड़की की बदल तीरसे
लिंग की भी स्थान दिया जा बहु है।
मीहन चुपचाप उनकी आत्मों की बुनता है।
साफ-साफ शालदी में न कहकर डॉकटर
मीहन से कहती है - "आपकी तीरी जी-जिरा
बच्ची की जर्बा दिया है न तो बह लड़की
है और न ही लड़का।"

डॉकटर के मुँह से क्यैसी बात सुनकर
मीहन का धूरा शरीर क्यैसे तिलमिला उठा
मानी आकाश की कीझी कड़कती लिखनी उसके
ऊपर गिर गयी ही और शरीर के बालन
की पीड़ा से बह तिलमिला उठा ही। डॉकटर
के साफ-साफ न कहे वाले उबके
कानी में साफ-साफ झूँस रहे थे - (तुम्हारा
बच्चा किन्नर है, तुम्हारा बच्चा किन्नर है....)
अचानक उपनी दीनी कानी पर चाथ रखकर
मीहन इतनी जीर बीं चीखा मानी यह शब्द
उसके लिए अत्यन्त असहनीय ही। उपना
आपा और हीरा संभालते हुए मीहन जी
डॉकटर ये सिर्फ इतना कहा कि - यह मैरा

बच्चा नहीं है, मैं इस बच्चे को कभी नहीं अपना
खेलता, मैं इस बच्चे को अपने भाष्य नहीं
ले जाऊँगा। माहिन के पैसा कहने पर डॉकटर
ने माहिन की समझानी की बहुत कौशिकी की
पर माहिन कुछ भी बुनने की तैयार न था।
वह यह कहते-कहते डॉकटर के काहिन औं गाहर
आ गया कि मैं इस छोड़े को अपने साथ
नहीं ले जाऊँगा।

भाविती वे पुरुष के कौप का शामिल
सदा भी स्त्री रही है। पुरुष की अपना
क्रोध कम करने के लिए स्त्री यक उत्तम
मार्ग नज़र आती है। क्योंकि पुरुष हमेशा से
स्त्री औं अपने की शार्तिशाली मानूना रहा है
वैशालिक रूप वे यह प्रमाणित किया जा
चुका है कि पुरुष का कार्य अली ही यक
स्त्री का ही परन्तु यक भूल के लिंग का
निष्पत्ति पुरुष के गुणस्त्री पर निष्पत्ति करता
है। परन्तु इस यहां उसके लिए दीनीं (स्त्री-
पुरुष) को सदृशागी मान कर चलते हैं ताकि
यक पढ़ा को इसका इकलीता गुणहरार रा
भिन्मेहर न भमझा जाए या यहूं कह लीजिए

कि एक का पढ़ा लेकर दूसरे के साथ पढ़ापात न किया जाए। परन्तु न पढ़ा लिखा हुआ समाज सदा भी शून्य के लिंग विवरण के लिए इन्हीं की ही अधिकार मानता रहा है। और कई छार ये पढ़े लिखे समाज में भी देवनी की मिल जाता है। हमी पुकार एक कड़वा बच यह भी है कि 'न पढ़े लिखे' समाज के साथ-साथ 'पढ़े-लिखे', समाज के आधी वे दोषादा इरक्मा आज भी तीसरे लिंग की समझ समाज का अंग नहीं भमझता है।

आज भी मौहन के काप का भाजन उसकी पत्नी मुझाता की हीना पड़ा। पुक्कव की कमज़ीरी के कारण मुझाता अभी भी बेट्ठी अस्पिटल के बेंड पर लौटी ही और उसके हर्चे की द्वी कमज़ीर हीने के कारण ऑक्सीजन घीरन में लिया गया था।

तिलमिलाया हुआ मौहन अपने परिवार के पास आकर गुस्से से बड़बड़ाने लगा - 'यह बच्चा जिसकी मुझाता ने खन्ना दिया है पहली मेरा नहीं है, आज से सुझाता मैंनी पत्नी नहीं है, आप जब लांग अपनी इसी

तबत मैरी बाधा घर चलिए, आज वे मीना भुजाना
को बाधा कीही समस्या नहीं है। इतना कुछ
बड़खाते हुए माँहन हाँस्पिटल वे लाहू निकलने
लगा। उसी शेकड़ी के लिए परिवार के लाकी
बदस्य भी उसके पीहे-पीहे लाहू आ रहा।
परिवार के किसी भी बदस्य की माँहन की
लाते समझ नहीं आ रही थी। जैसी ही
माँहन हाँस्पिटल के दरवाजे पर पहुँचा शामने
भी किन्नरी का व्यक्त बम्भु छलाड़ियाँ बता
तालियां बजाता हुआ माँहन के सराज आ
केज्जा हुआ।

एक पीड़िदायक सत्य यह भी है कि
समाज के जिस वर्ग, भम्भु की हम अपनी
समाज का हिस्सा मानने वे भी छंकार
करते हैं। वही भम्भु वर्ग समाज के पुत्रों के
परिवार की व्यवसी बड़ी खुशी के समरा बहा-
द्यां देने तथा परिवार के जए नहीं सदस्य
की आवश्यिति देने व्यवसी पहले आते हैं।
कुछ क्षण पश्चात उन किन्नरी में एक
किन्नर ने तालियां बजाते हुए माँहन की
बहाई दी तथा बच्चे के जन्म की खुशी में

कुछ इन शब्दों में मीहन की नींग मांगा - 'ए दो ना'। शायद यह शब्द समाज के विषयकाल ने उन्हें अपनानी की भजबूर कर दिया है या ये कहे कि वे ही समाज की क्षतियों के लिए कुछ मांगनी के लिए उस शब्द की अपनानी के लिए भजबूर ही गए हैं।

किन्नर के इस शब्द की सुनाते ही मीहन ने अपनी छच्ची के ब्रह्म की कल्पना किन्नर के ब्रह्म में की। अपनी छच्ची की ठस स्थिति और शब्द के साथ कल्पना करते ही मीहन का इदय धूना और कीष की झट गया। शायद मीहन के अहम के सभाव पिटा का पुँज हार पूका था।

अन्न अवहरि

बी.ए. हिन्दी (विशेष)

तृतीय वर्षी

कहानी भूतियोगिता - तृतीय पुस्तकार

बृक्षमात की बी रत

दिन भर के काम की जल्दी से झगड़ कर मैंने अपना लैपटोप उठाकर कहा “मर, अब मैं चलता हूँ... आज का भारा काम ही चुका हूँ। लेकिन ऐसी बात यह गायी हूँ जो कल सुबह तक उन्होंने दूँगा।”

अनुज सदा ने बिना देखे जावाब दिया, ठीक हूँ तुम निकली, बैसे भी मीसग खराल हो रहा हूँ, तुम्हें ही छाँट तो लग ही जाएँगे घर पहुँचते।

मैं उस किसी तरह उस कर्मरे में निकल जाना चाहता था। आज साहसी का अन्मादिन था। और मैं पहली ही बहुत दैर कर चुका था। अच्छा सुनी, तुम ऑफिस की गाड़ी में आओगी ना... ही संकेती लैक शीट पर लौटकर उपर्युक्त शब्द भी पूरी कर लैना... कल एम डी साहब आ रहे हूँ मारिंग में, फिर से अनुज यह की आवाजे आए।

न चाहते हुए मैंने छँठी मुस्कान के बाध पीढ़ी निकल छों मैं सिर हिला दिया।

लिफ्ट में चुमते हुए मौकाहल में गाबूराम का नम्रतर देखने लगा।

“गाबूराम, कहाँ ही? चलो जल्दी निकलना है...”
हो साहब, हम तो यही है पार्किंग में... अभी निकलते हैं गाड़ी।

जूदाकांडी शुरू ही चुकी थी, मैं हीड़ता हुआ वहाँ पहुँचा।

मुझे उखड़ा हुआ देखकर उसने चुपचाप दरवाजा खोल दिया और इश्वर करनी की लौठ गया।
मैं भी लैपटोप खीलकर शुरू ही गया।

करीब आई धर्टे लाद मेरा काम कुछ कुछ पूरा हीता सा दिख रहा था।
इसी बीच गाबूराम की गालियाँ झुनारी दे रही थीं। बीच-बीच मैं बाहर की दूसरी गाड़ी की दैता जा रहा था हांलकि गाड़ी के शीशे बन्द हीने के काना कोई सूज नहीं सकता था।
मेरे लिना।

अचानक ही गाड़ी का पंगल गहराने लगा।
बारिश अब जारी रही ही रही थी और मैंकड़ी हँडब्राइट की निकली शीशानी बारिश के पानी से ढंककर आ रही थी।

मैंने घड़ी देखी तो दस बज चुके थे। लार

पहुँचते-पहुँचते रास्ते लगानी ही। आप्सी तक कोई गिफ्ट नहीं लिया था। अब भाष्मि के लानी और मिलेंगी। तड़का लगा कि मन ही मन कुदखुढ़ते हुए लैपटॉप बन्द किया। एकड़की की ओर दौखती लगा।

अचानक से किसी ने गाड़ी के प्रवाही पर चौट की... मैंने कोंठहल से दरवाजा बतीला।

“ऐ चिकने..” बाष्ठ छट ना, दौखता नहीं कितनी बारिश ही रही थी बाहर... मेरे को लसा आगे भीस किलोमीटर पर जो पंजाबी ढाढ़ा थे, वहाँ तक ढूँड दे... तेरे बच्चे ऐसे... खूब तरक्की मिले तुझे।”

मेरे कुद भी कहने से पहले ही बी अगले ही पल मेरे पास की सीट पर जग गई,।

“दौखिए यह मेरे आँकिस की गाड़ी थी, मैं कैसे किसी को लिप्ट नहीं हूँ बाकता।

मेरी इन्क्वायरी ही जाएगी। आप ब्याघों “योंडा लात की छतना कुहकर मैं अपना बॉल्ट टटीलने लगा।

“ऐ साहू, मेरी जगह कोई खूबसूरत लड़की हीती तब भी चाही कहता रहा?”

कोई शायद मेरी छोप को पहचान नहीं।

“ठीक हूँ तो, जाती हूँ मैं” और दरवाजे की

और छढ़ गयी ।

‘तबकी अच्छा ठीक है, लाहू बहुत लारिश ही रही है मैं आपकी हीड़ दूँगा ।

और किर कुद्द देर यू ही खामोशी ढाई रही ।

फिर मेरी नजर उस पर गयी, साँवली सी...

अनीसत कद काढ़ी की... लारिश की तजह की सस्ता सस्ता मैकआप लूँड़-बूँद़ कर बह रहा था।

बस चौहरे पर कोई शिक्कन नहीं ही मेरी तरह।

‘क्यों साहब, कभी हिजड़ा नहीं देखा क्या ?

बस ही मैं अपनी आँखें धुगा के लिए रही गया।

‘नहीं नहीं वी... मैं... बस ऐसे ही... तुम्हें देख रहा था तुम भीग गए हो ना... लीगार ही जाऊँगे। ये रेमाल ली और धीड़ा पीट ली।

अब मैं याह बहा था जल्दी से जाम खुली और हमें इसके गन्तव्य तक पहुँचाकर, कोई गिफ्ट या कम से कम नॉक्सेट ही लेकर चर पहुँच जाऊँ।

सुबह - सुबह ड्रेजिन्ट्रान भी मैंना करनी थी। यस सर की माला भी जपनी ही।

‘ली साहब, आपका रेमाल... ये क्या यू ।’

“अरे नहीं, रेख ली तुम्हें जरूरत पड़ेगी।”

‘मुझे जरूरत पड़ेगी या... ये रेमाल अद्भुत ही गया है सते हुए वी बीजी ।’

बचपन के हन जीर्ने जींगी में अदृतापन ही तो सिखाया गया था। ये गन्दे लींग बच्चों की पकड़ ले जाते हैं... और भी न जाने क्या-क्या।

“ क्यों आहल, बड़ी रेशन में लग रहे हैं... क्या हो गया? कल के ये चिकना चैक्वा उतरा सा झोग रहा है? ”

ये भुजते ही मैं भड़क रहा “ क्या-क्या चिकना चिकना लगा रखा है, अपने काम के काम रखी ठूसे कुछ पता भी है। कितनी पुँछलम्ब मौती है लाइफ में... बात करती है... हर परेशानी लुहारी तरह घाघरा उठाकर या हाथ कीला कर नाचने रथा लाली बजाने के छल नहीं हो जाती। ”

“ मही बीले आहल... हमकी क्या पता शाइफ की पुँछलम्ब के बरि मैं

वो कहने लगी छिना बकँके.

“ पैदा होते ही माँ बाप ने छोड़ दिया, न पढ़-लिख भकी, न अपना बचपन जी भकी... न ओरत कहलायी न मर्दी... कहने की तो बहुत पैसा कमाया। बायद तुगर्से भी उदादा पर किस कीमत पर... कोई अपनी रवृग्नी से हिज़ेँ की जिन्दगी नहीं चुनता आहल।

तो अब भी उस बक्काल व्ही आँखू पौट रही रही पता है... दुनिया में हर चीज का डुलीकेर है...

मैरी माँ नहीं तो म्यामीसी तो हूँ और माँ से
ज्यादा यार लगती है। मैं न तो माँ बन सकती
हूँ न लाप पर हर जन्म बच्चे को गोद में
खिलाकर आशीर्वदि तो खड़ भैरव ही छिलाती
है और मेरे जैसे और भी तो है। जिनकी
माँ की जखकत है... उसी कान पूरा करेगा... मैं
ही ना तो कहती रही...

“साहब इस दुनिया में सबकुछ है... जो तुझे
चाहिए वो भी और जो नहीं चाहिए वो भी।
अब पूरा दिन तुम उसके लाई मैं भी चलै रहौं
जो कुछ नहीं चाहिए तो वो कैसे मिलेगा।
जो लड़के चाहिए उन्हीं उसका जब्ज कब मना
एगा जो तेरे पास अभी इसी वक्त है।”

तभी छानुशम की आवाज आयी “साहब, पंजाबी
ढाबा आ गया।”

भास कर का ढूट चुका था। बोहर का भी और
अंदर का भी... मैं कृतज्ञता वर्षे उसी दौखे जा
करा था... वो हीली...

चलती है आहब, “अपना डॉय फँड यहां मेरा
ठूट कर रहा है।”

हस बार मैं भी हम्म दिया...

“आई रुम सौरी”

“चली ना साहब, “तुम अच्छा आहमी है... मुझे
नहीं पता तेरी क्या प्रॉब्लम है फिर भी... हतना
नहीं क्षीचति लोडफ का... हीते कल पर तेरा कोई
बम्ब नहीं और आने वाले कल का कोई लिकाना
नहीं... आज मैं जी”

हतना कहकर उसने उपनी पसी दूरी बदक बवपये का
सिक्का निकाला और मेरे हाथ में रख दिया।
“ये लोंगी साहब, कहते हैं, हमारे जैसे लोंगी से मिला
सिक्का बहुत बरकत लाता है, तेरा परिवार बना
वहे उपर खूब बने फले फूले,”

हतना कहते हुए वी शॉट क्रास करके जाने लगी।
उब बारिकी भी बदक चुकी थी,

बाबूबाम फिर सै बड़बड़ी लगा कल पूरी गाड़ी
धुलवानी पड़ेगी, आगे आकर बैठ जाओ तो साहब
पूरी सीट गीली कर ढी उसने।

मैं उपरी आकर बैठ गया उब भी अपने हाथ
में बर्बी उस सिक्के की ही दौख छाड़ा,

अदिति शर्मा

ली.ए. हिन्दी (विशेष)

तृतीय रूपी

हिन्दी साहित्य परिषद्

वार्षिक रिपोर्ट (2020-2021)

वर्ष 2021 में दौलतराम महाविद्यालय की 'हिन्दी साहित्य परिषद्' द्वारा मनेक साहित्यिक कार्यक्रम सम्पन्न करवाई गई, जिसमें हिन्दी विभाग की प्राध्यापिकाओं द्वातामो द्वातामो की मरम्मत सहभागिता रही। कोरोना वैदिक सहायता के चलते सभी प्रतियोगिताएँ ऑनलाइन माध्यम द्वारा आयोजित करपाई गईं। विद्युत द्वातामो द्वातामो प्राध्यापिकों के उत्साह ने प्रतियोगिताओं को रोचकता को बरकरार रखा।

नवागंतुक द्वातामो के स्वागत के लिए 18 नवम्बर, 2020 को 'ओरिस्टेशन डे' का आयोजन किया गया, जिसमें द्वातामो को विभाग की सभी प्राध्यापिकाओं और प्राध्यापक से परिधित करवाया गया।

23 जनवरी, 2021, 'हिन्दी विभाग' दौलतराम महाविद्यालय की साहित्यिक सांस्कृतिक इकाई हिन्दी साहित्य परिषद् के कार्यकारिणी सदस्यों का निवाचिन डॉ. संतोष और डॉ. नोद्र गुप्ता की देखरेख में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

नवनिवाचित सदस्य इस प्रकार हैं-

अध्यक्ष - अश्विंगी (तृतीय वर्ष)

उपाध्यक्ष - अंजू (तृतीय वर्ष)

सचिव - रिया (द्वितीय वर्ष)

सहसाचिव - अदिति (द्वितीय वर्ष)

कोषाध्यक्ष - परशा (प्रथम वर्ष)

सहकोषाध्यक्ष - नीधि (प्रथम वर्ष)

दिनांक ५ फरवरी, २०२१ को हिन्दी साहित्य परिषद्
आंनलाइन निकष्ट रूपं कहानी प्रतियोगीता का मायोजन
किया गया।

प्रतियोगीता के परिणाम इस घकार हैं-

-निवंध प्रतियोगीता -

प्रथम पुरस्कार - दीपाली (प्रथम वर्ष)

द्वितीय पुरस्कार - साधना (द्वितीय वर्ष)

तृतीय पुरस्कार - इश्वरप्रिया (प्रथम वर्ष)

कहानी प्रतियोगीता -

प्रथम पुरस्कार - अदिति (तृतीय वर्ष)

द्वितीय पुरस्कार - रेशमी (द्वितीय वर्ष)

तृतीय पुरस्कार - अनू अग्रणी (तृतीय वर्ष)

निर्णायक मण्डल के रूप में डॉ. समला
और डॉ. पिंका सिंह रहे।

बसंत पञ्चमी के उपलक्ष्य में, १७ फरवरी, २०२१ को
दौलतराम मठाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय के
धांगण में हिन्दी, संस्कृत, संगीत विभाग द्वारा
बसंतोत्सव रूपम् सरस्वती पूजा का आयोजन किया
गया। कार्यक्रम का आरम्भ मंगलाचरण से हुआ।
प्राचार्य प्रो. मुविता रायें मैम उपप्राचार्य डॉ. सप्रिता
नन्दा मैम ने बसंत के महत्व को बताते हुए सभी
प्रथम वर्ष की दावाओं का महाविद्यालय में स्पागत
करते हुए सभी पर मां सरस्वती का आरोविद बना
रहे हैं सभी मंगल कामना की। तीनों विभाग द्वारा
बसंत के आगमन के उपलक्ष्य में रंगारंग कार्यक्रम
प्रस्तुत किए गए। और मां सरस्वती की मारती से
कार्यक्रम का समाप्त हुआ। अंत में प्रसाद वितरण
किया गया।

बसंत क्टनु के भागमन पर हिन्दी विभाग के हिन्दी साहित्य परिषद् द्वारा आनंदलाल रंगोली प्रतियोगिता और कार्डमोकिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विमागाध्यक्षा डॉ. ज्योतिशर्मा ने सभी द्वालाओं को बसंत मागमन की जुमकामनाएँ देते हुए उनका हौसला घदाया। विभाग की अन्य प्राध्यापिकाओं ने प्रतियोगिता के दौरान उनका उत्साह वर्धन किया। विभाग की सभी द्वालाओं ने बढ़चढ़कर भाग लिया। रंगोली प्रतियोगिता में विभिन्न रंगों, अनाज के दानों, सज्जियों दालों, पत्तों से रंगोली बनाई गई। बसंत पर जाधारित सुन्दर-सुन्दर कार्ड बनाए गए। द्वालाओं ने अपनी कला को सृजनात्मक तरीके से प्रस्तुत किया।

प्रतियोगिता के परिणाम इस प्रकार हैं-

रंगोली प्रतियोगिता-

प्रथम पुरस्कार - भद्रिति (तृतीय वर्ष)

द्वितीय पुरस्कार - सहस्री (प्रथम वर्ष)

तृतीय पुरस्कार - आरती मीना (प्रथम वर्ष)

कार्ड मोकिंग प्रतियोगिता -

प्रथम पुरस्कार - भाकांशा नेगी (प्रथम वर्ष)

द्वितीय पुरस्कार - नैन्ती (द्वितीय वर्ष)

तृतीय पुरस्कार - ग्रामिका (तृतीय वर्ष)

निर्णायिक मण्डल की भूमिका में डॉ. संज्ञा उपाध्यय तथा डॉ. मीनक्षी रहे।

24 फरवरी, 2021 को परिषद् द्वारा विभाग की द्वालाओं के लिए स्वरचित कविता पाठ, लोकगीत और लोकनृत्य प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें निर्णायिक मण्डल की भूमिका में डॉ. राजवन्ती रवि सुन्नी नीतिशा छलखो रहे।

प्रतियोगीता के परिणाम इस प्रकार हैं-

स्वरचित कविता पाठ प्रतियोगीता -

प्रथम पुरस्कार - अश्वा (द्वितीय वर्ष)

द्वितीय पुरस्कार - कोमल (द्वितीय वर्ष)

तृतीय पुरस्कार - अमृता जड़िया (तृतीय वर्ष)

लोकगीत प्रतियोगीता -

प्रथम पुरस्कार - कन्चन (तृतीय वर्ष)

द्वितीय पुरस्कार - नान्दिनी पुरीहित (द्वितीय वर्ष)

तृतीय पुरस्कार - भावना रिखारी (द्वितीय वर्ष)

लोकनृत्य प्रतियोगीता -

प्रथम पुरस्कार - अश्वा (द्वितीय वर्ष)

द्वितीय पुरस्कार - मानसी (तृतीय वर्ष)

तृतीय पुरस्कार - अमृता (तृतीय वर्ष)

२७ फरवरी, २०२१ को विभाग की द्वातांशी के लिए 'आशुभाष प्रतियोगीता' का आयोजन किया गया।

निसके परिणाम इस प्रकार रहे ।

प्रथम पुरस्कार - श्रीवांगी (तृतीय वर्ष)

द्वितीय पुरस्कार - रितिका गोपल (तृतीय वर्ष)

तृतीय पुरस्कार - सेथा और छक्किया (प्रथम वर्ष)

नियांयिक मण्डल की श्वासिका में डॉ. मनीष कुमार और्धवी डॉ. नीरा जलक्षणि रहे ।

विभाग की सभी प्राध्यापिकाजी, प्राध्यापक परिषद के कार्यकारिणी मदस्यों एवं विभाग की सभी दाताजी का धन्यवाद जिनके महायोग से वर्षभर 'हिन्दी साहित्य परिषद' के कार्यक्रम सफलतापूर्वक जायोजित किए जाते हैं। परिषद की वर्षभर की साहित्यिक गतिविधियों के लिए महाविद्यालय की प्राचार्या जी का आभार जेन्होंने वर्षभर हमारा मार्गदर्शन किया।

संयोजक
हिन्दी साहित्य परिषद्



कार्ड मेकिंग प्रतियोगिता

रंगोली प्रतियोगिता





लोकनृत्य प्रतियोगिता



लोकगीत प्रतियोगिता

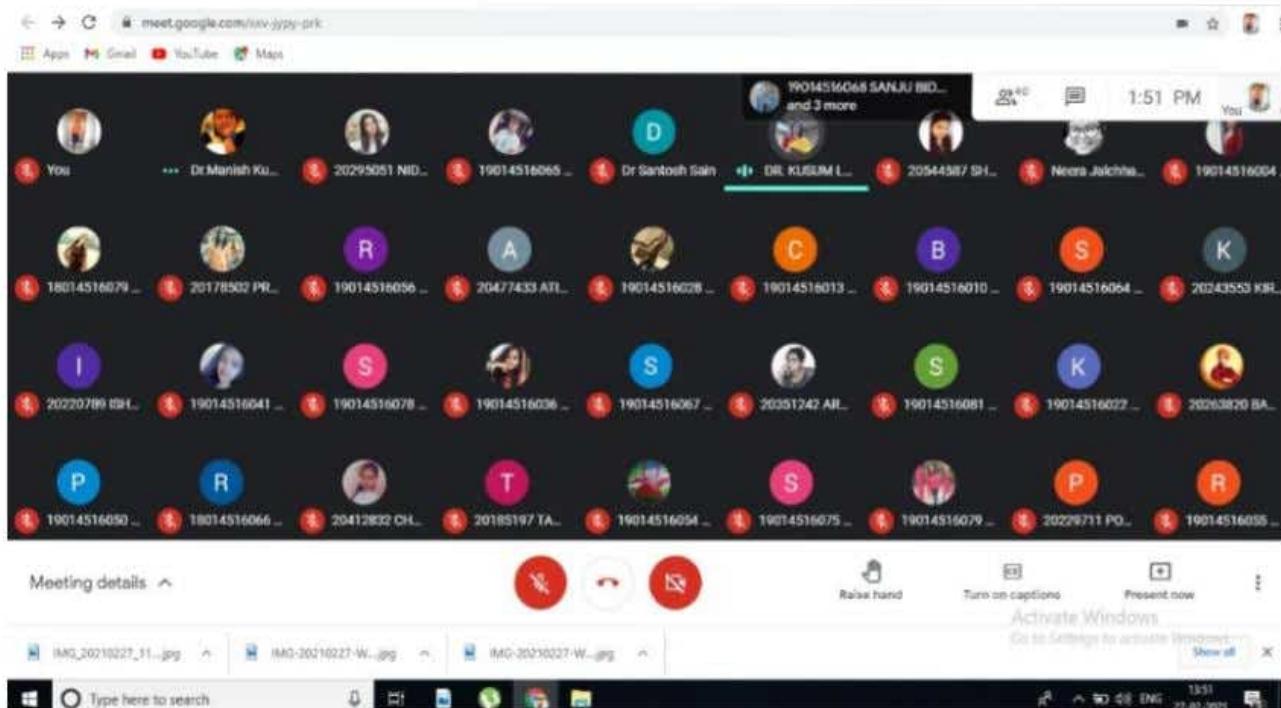




स्वरचित कविता पाठ प्रतियोगिता



आशुभाषण प्रतियोगिता



Meeting details ^



Raise hand

Turn on captions

Present now

Activate Windows

[Go to Settings to activate Windows](#)

[Show off](#) X

IMG_20210227_11.jpg

IMG-20210227-W.jpg

IMG-20210227-W.jpg

Type here to search

13:51 27.02.2021

दैलित राम महाविद्यालय

हिन्दी साहित्य परिषद्

महिला सशक्तिकरण

“ यदि इस शरीराः मे
इक नारोऽको छोड़।
प्रदान करते हैं तो वह
पूरे देश को कठशास्त्रा
होता है।”

“ कैही जीवन की लक्ष्य
न हो, उसे इन बातों
का अभाव समझे होंगा
चाहिए। हमें जुद का कद
शरण भजा बत लेना चाहिए
कि अमाल द्रुकाश छनाई
थेहिए ल्वच शम्भिर द्वे
होंगे होंगा। ”

कारियर

वेश्वास

निवास

सास्त्र

दृष्टिकोण

बुरजात

कर्म

शील

“ स्तं लिखिते - पातिका ॥ ”

2020-21